वाप्कोस दर्पण

त्रैमासिक गृह पत्रिका

अंक 94, जुलाई-सितम्बर 2019

राजभाषा विशेषांक

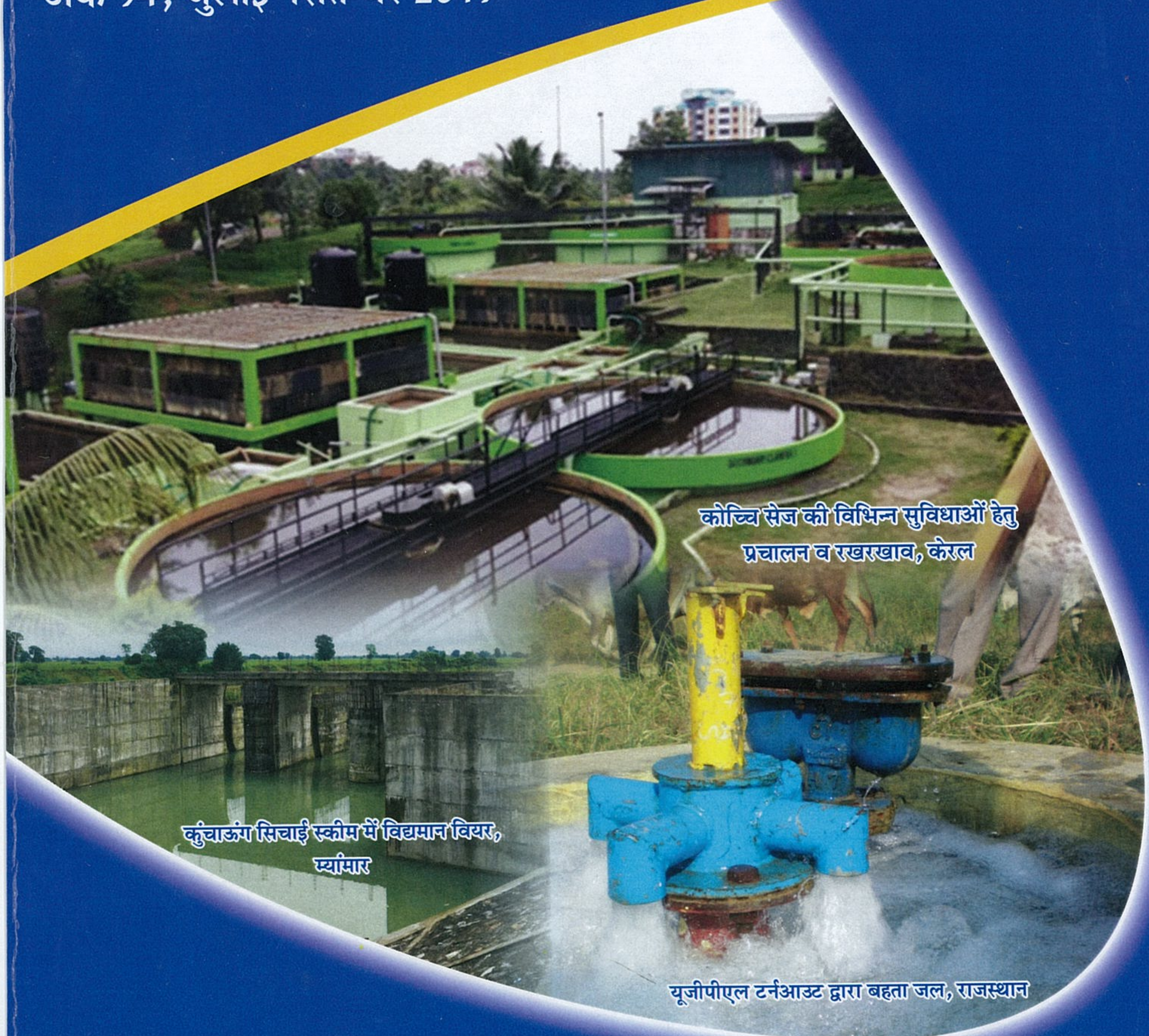

राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ और गहरा संबंध है- डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद

राष्ट्रभाषा हिन्दी किसी व्यक्ति या प्रांत की सम्पत्ति नहीं है, उस पर सारे देश का अधिकार है - सरदार वल्लभ भाई पटेल

आर.के. गुप्ता
अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक

सन्देश

''हिंदी दिवस'' के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। तभी से प्रति वर्ष 14 सितम्बर **''हिंदी दिवस''** के रूप में मनाया जाता है। हिंदी प्राचीन काल से ही भारत की सम्पर्क भाषा रही है क्योंकि यह सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। भाषा किसी भी देश के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त एवं प्रभावी माध्यम है।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सदभावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। भारत में हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य है। हिंदी ने अपनी सरलता, मौलिकता एवं सुबोधता के बल पर भारतीय संस्कृति और साहित्य को जीवन्त बनाए रखा है। राजभाषा हिंदी में सरसता है और इसका शब्दकोश व्यापक एवं समृद्ध है।

हमारे व्यवसाय के क्षेत्र में व्यापार की अत्यंत सम्भावनाएं हैं। व्यवसाय के प्रतियोगी व वैश्वीकरण के वातावरण ने भाषा के महत्व को उजागर कर दिया है। व्यवसाय के क्षेत्र में तीव्र गति से हो रहे परिवर्तन के साथ ही हमें उत्साह, नवीनतम ज्ञान और सकारात्मक गुणों के साथ सतत् रूप से आगे बढ़ना है। वाप्कोस के विभिन्न तकनीकी प्रभागों द्वारा अपने कार्य में हिंदी का अधिकतम प्रयोग इस क्षेत्र में एक अमूल्य योगदान है। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आज हर क्षेत्र में सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध हैं जिनका प्रयोग करके हम राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग दे सकते हैं।

आइए, इस अवसर पर हम सब अपने कार्यालय का ज्यादा से ज्यादा कामकाज राजभाषा हिंदी में करते हुए संविधान के प्रति अपनी निष्ठा व समर्पण की भावना का परिचय दें।

''जय हिंद''

आर.के.गुप्ता
(आर.के. गुप्ता)

दिनांक: 02.09.2019

वाप्कोस दर्पण

अक्टूबर- दिसम्बर, 2019 अंक-94

संरक्षक
आर.के.गुप्ता
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

तकनीकी संपादन सलाहकार
अमिताभ त्रिपाठी
वरि. कार्यकारी निदेशक

संपादन मण्डल
अनुपम मिश्रा
निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास
डा. डा. आर.पी.दूबे
वरि.कार्यकारी निदेशक
अमिताभ त्रिपाठी
वरि. कार्यकारी निदेशक

संपादक
निम्मी भट्ट,
प्रमुख (रा.भा.का.)

उप संपादक
डी.के.सेठी
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

सहयोग
गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक
शारदा रानी, वरि.सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ सं0
संदेश - श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, जल शक्ति मंत्री	1
संदेश - श्री रतनलाल कटारिया, जल शक्ति और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री	2
संदेश - श्री यू.पी.सिंह, सचिव, जल शक्ति मंत्रालय	3
संबोधन - निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास	4
दो शब्द - वरि.कार्यकारी निदेशक एवं सदस्य संपादन मण्डल	5
दो शब्द - वरि.कार्यकारी निदेशक (बांध व जलाशय) एवं तकनीकी संपादक	6
सम्पादकीय - प्रमुख (रा.भा.का.) एवं संपादक	7
राजभाषा गतिविधियां	8
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुडगांव की बैठक	9
हिन्दी पखवाड़े का आयोजन	10
नराकास, दिल्ली (उपक्रम-2) के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन	13
लेख - सूचना प्रौद्योगिकी की उपलब्धियां	14
लेख - मोबाइल के दुष्परिणाम	17
सीसी एक्सीलेंस अवार्ड - 2019	19
कविता - पानी आस है पानी प्यास है	20
लेख - जाति या मानसिकता	21
वाप्कोस के फील्ड कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन	25
लेख - घर में क्यों बेगानी हिन्दी	30
लेख - 35 किलोमीटर का सफर	34
लेख - गुरू की महिमा	37
लेख - स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत	41
लेख - महिला सशक्तिकरण	42
कविता - लम्हें	44
लेख - जंक फूड की जगह घर का ताजा खाना खाएं	45
लेख - जल संरक्षण	46
कविता - चूहे तुमको नमस्कार है	48
कविता - आरंभ	49
आपके पत्र	50

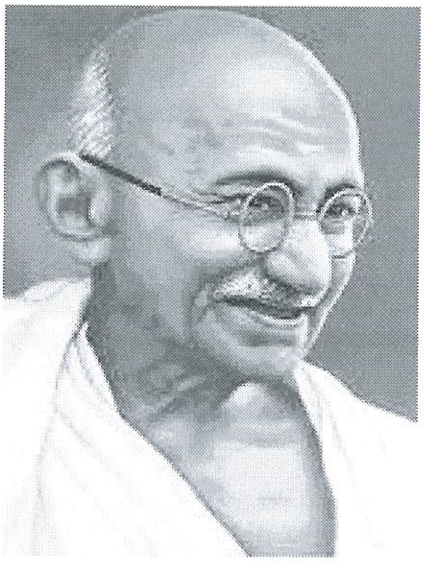

ईश्वर-भक्त वही व्यक्ति है, जो प्रत्येक जीव में ईश्वर के दर्शन करता है। ऐसा व्यक्ति किसी भी दूसरे व्यक्ति को मारने के लिए तैयार नहीं होगा। लेकिन आप शायद यह कहेंगे कि एक बुजदिल व्यक्ति भी यह कहकर ईश्वर के भक्तों में खप जाएगा - कि वह तलवार से काम नहीं लेता। कायरता ईश्वर में आस्था का परिचायक नहीं है। ईश्वर में सच्ची आस्था रखने वाले व्यक्ति में तलवार चलाने की ताकत होती है, लेकिन वह यह सोचकर उसका इस्तेमाल नहीं करता कि प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर की प्रतिमा है।

- सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (खण्ड 67), पृ0 71

गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

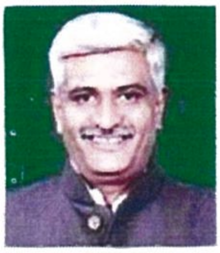

जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार
Minister for Jal Shakti
Government of India

03 SEP 2019

संदेश

भारत एक बहुभाषी देश है। यहां की सभी भाषाएँ अपने आपमें समृद्ध और सक्षम हैं। हमारे संविधान निर्माताओं ने काफी सोच-विचार के बाद 14 सितम्बर, 1949 के दिन हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया था और संविधान सभा ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया था कि स्वतंत्र भारत की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी होगी। उस समय भी यह एक ऐसी भाषा थी जिसे भारत की अधिकतर जनता बोल सकती थी।

हिन्दी बहुत सरल और मधुर भाषा है। यह संपूर्ण भारत में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। इसी भाषा के माध्यम से जन-जन में हम जागृति ला सकते हैं। विश्व उस देश को सम्मान की दृष्टि से देखता है जिस देश के नागरिक अपनी भाषा में सोंचे और लिखें। भारत जैसे विशाल, बहुभाषी और प्रजातांत्रिक देश की चहुँमुखी विकास प्रक्रिया में हिन्दी के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं की भी अहम भूमिका रही है। राष्ट्रहित में हमें अपनी राष्ट्रभाषा को उसकी गरिमा देकर उसका गौरव बढ़ाना है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था कि राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता व उन्नति के लिए आवश्यक है।

हिन्दी दिवस के अवसर पर मैं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग तथा इसके सभी संबद्ध व अधीनस्थ कार्यालयों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों से अनुरोध करता हूँ कि इस अवधि के दौरान अधिक से अधिक काम हिन्दी में करें तथा भविष्य में भी उसे जारी रखें। राजभाषा अधिनियम व उसके अधीन बनाये गये नियमों का पूरा-पूरा अनुपालन करना हम सबका संवैधानिक कर्तव्य है। इस अवसर पर हम सब अपने इस दायित्व को समझते हुए शपथ लें कि अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज यथासंभव हिन्दी में करते हुए राजभाषा के विकास में अपना योगदान देंगे।

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

Office : 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel: No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, Fax : (011) 23710804
E-mail : minister-mowr@nic.in

रतन लाल कटारिया
RATTAN LAL KATARIA

जल शक्ति
और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF STATE FOR
JAL SHAKTI AND SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

सत्यमेव जयते

संदेश

हिंदी दिवस पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

भारत में भाषायी विविधता के होते हुए भी हिन्दी हम सबको एकता के सूत्र में पिरोए हुए है । हिन्दी किसी भी वर्ग विशेष की भाषा नहीं है अपितु इसका प्रयोग कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे भारत में सभी वर्ग के लोगों द्वारा किया जाता है, इसलिए संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया है । राष्ट्रहित में हमें अपनी राष्ट्रभाषा को उसकी अस्मिता, गौरव और उचित स्थान देते हुए अपने संवैधानिक दायित्व को निभाना है। आजादी मिले हुए 72 वर्षों से भी अधिक समय हो चुका है किन्तु हम सरकारी कामकाज में अभी भी हिन्दी को वह स्थान नहीं दे सके जो बहुत पहले ही दिया जाना चाहिए था । जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय में 14 सितम्बर, 2019 से 28 सितम्बर, 2019 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है । सभी से मेरा यह आग्रह है कि इस शुभ अवसर पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय तथा इसके अधीन आने वाले कार्यालयों के सभी अधिकारीगण और कर्मचारीगण मिलकर यह संकल्प करें कि हम अपने निजी व सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक उपयोग करेंगे ।

विभाग के अधिकांश अधिकारी तथा कर्मचारी हिन्दी में या तो प्रवीणता प्राप्त हैं अथवा उन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है । ऐसी स्थिति में हमें राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ठोस कार्रवाई करनी है । ये लक्ष्य तभी प्राप्त किए जा सकते हैं जब हम यह संकल्प करें कि हम अपने सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक उपयोग करेंगे । यह कार्य केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए, तभी हम निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ पाएंगे ।

मैं विभाग में हिन्दी पखवाड़े की सफलता की कामना करता हूँ ।

(रतन लाल कटारिया)

215, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली -110 001, 215, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
दूरभाष : (011) 23708419, 23718759, फैक्स : 011-23354496, Tel. : (011) 23708419, 23718759, Fax : 011-23354496
Delhi Residence : 4A, Telegraph Lane, Firoz Shah Road, New Delhi, Phone : 011-23329660
Residence : 352, Katariya Kunj, Mata Mansa Devi Complex, Sector-4, Panchkula, Haryana, Tel. : 0172-2555352,

जल शक्ति अभियान

॥ नमामि गंगे ॥

यू. पी. सिंह, आई. ए. एस.
U.P. SINGH, IAS
सचिव
SECRETARY
Tel. : 23710305
Fax : 23731553
E-mail : secy-mowr@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास
और गंगा संरक्षण विभाग
श्रम शक्ति भवन
रफी मार्ग, नई दिल्ली-110 001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION
SHRAM SHAKTI BHAWAN
RAFI MARG, NEW DELHI-110 001
http://www.mowr.gov.in

अपील

हिन्दी प्राचीन काल से ही भारत की सम्पर्क भाषा रही है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक इसके बोलने और समझने वालों की संख्या सर्वाधिक रही है। भाषाओं को बोलने वालों की दृष्टि से देखा जाए तो सारे संसार में पहला स्थान चीनी भाषा का, दूसरा स्थान अंग्रेजी का और तीसरा स्थान हिन्दी का है। भारत में हिन्दी की व्यापकता और लोकप्रियता को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसी कड़ी में राजभाषा अधिनियम और नियम बनाए गए है। इनके अंतर्गत हम से यह अपेक्षा की जाती है कि हम अपना अधिक–से–अधिक काम हिन्दी में करें। सरकारी कामकाज में पिछले कई वर्षों से हिन्दी का प्रयोग कमिक दृष्टि से आगे बढ़ा है। हिन्दी को आगे बढ़ाने में विभिन्न प्रकार के मीडिया/सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परन्तु उस गति से सरकारी कार्यो में इसका प्रयोग नहीं बढ़ पाया है। सरकारी दफ्तरों में हिन्दी की गति को तीव्रता देने के लिए अभी और प्रयास करने की जरूरत है। सूचना क्रांति के इस युग में सरकारी कार्यालयों में हिन्दी भाषा को सुगम बनाने के लिए हिंदी को भी नई तकनीकों से लैस करना होगा और आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान करना होगा।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय में 14 सितम्बर, 2019 से 28 सितम्बर, 2019 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसके दौरान हिन्दी से संबंधित अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। मुझे उम्मीद हे कि मंत्रालय के अधिक–से–अधिक अधिकारी/कर्मचारी इनमें भाग लेंगे और यह आयोजन हिन्दी में काम करने के लिए आप सभी को नई स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करेगा। हिन्दी में काम करने की भावना केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए ताकि हम अपेक्षानुसार अपने संवैधानिक दायित्वों को पूरा कर सकें।

हिन्दी दिवस के लिए मैं आप सब को बधाई देता हूँ और हिन्दी पखवाड़े की सफलता के लिए कामना करता हूँ।

(उपेन्द्र प्रसाद सिंह)

जल संरक्षण - जीवन संरक्षण
Conserve water - Save life

संबोधन

'हिन्दी दिवस' पर आपको मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में उस देश की भाषा का अहम योगदान होता है। भारत में हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसने विविधता को एकता के धागे में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज "कम्प्यूटर" और "इन्टरनेट" ने विश्व में सूचना क्रांति ला दी है। सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न हिन्दी ई-टूल्स जैसे - यूनिकोड, हिन्दी की-बोर्ड, ई-महाशब्दकोश, लीला सॉफ्टवेयर, मशीन अनुवाद आदि का आज के दौर में अधिकाधिक प्रयोग किया जा रहा है जिससे कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य करना अत्यंत सरल हो गया है। हमें महत्वपूर्ण जानकारी व ज्ञान उपलब्ध कराने के लिए वेबसाइटों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वाप्कोस में दिनांक 2 सितम्बर से 16 सितम्बर, 2019 तक "हिन्दी पखवाड़ा" आयोजित किया जा रहा है। मुझे आशा है कि 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह के आयोजन के अंतर्गत होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों में अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी भाग लेंगे। हमें राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन एवं उत्तरोत्तर विकास के लिए राजभाषा से संबंधित आदेशों का अनुपालन भी उसी दृढ़ता से करना है जिस प्रकार हम अन्य सरकारी अनुदेशों का पालन करते हैं।

मैं, कार्यालय के सभी उच्चाधिकारियों से अपील करता हूं कि वे अपने दैनिक कामकाज में मूलरूप से हिन्दी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिन्दी में करने की प्रेरणा मिल सके। आइए, इस पावन सुअवसर पर हम सब मिलकर प्रतीज्ञा करें कि हम मन, वचन और कर्म से हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय एवं सृजनात्मक योगदान करेंगे।

"हिन्दी दिवस" के अवसर पर आप सभी को पुन: मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)

निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.)

एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

दो शब्द

हमारे देश की सभी भाषाएं और बोलियां हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक धरोहर हैं। किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए भाषा-शक्ति आधार का काम करती है। भाषा सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता और अखंडता की एक महत्वपूर्ण कड़ी भी होती है। हमें कार्यालय के कार्य में सरल एवं सहज हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए ताकि सभी आसानी से समझ सकें और इसका प्रयोग बहुआयामी हो सके। मूलरूप से कार्यालयीन कार्य हिन्दी में किए जाने चाहिए जिससे राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढेगा और राजभाषा नीति का सही अर्थों में कार्यान्वयन संभव होगा।

पिछले कई वर्षों से हिन्दी का निरंतर विकास हो रहा है। राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए हमें राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। हम कम्प्यूटरों पर उपलब्ध आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें, जो देश अपनी भाषा को अपनाता है, वह अपने आपको महान व शक्तिशाली भी बनाता है। यह प्रसन्नता का विषय है कि आज राजभाषा हिन्दी देश में लगभग सभी जगह सम्पर्क सूत्र का माध्यम बनने में सक्षम हो रही है।

हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हमें निरंतर प्रयास करने होंगे। साथ ही, हमें न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में हिन्दी भाषा का प्रकाश फैलाने के लिए अपना योगदान देना होगा। आइए, हम सब आज हिन्दी दिवस के अवसर पर संकल्प लें कि हम अपने कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण की भावना का परिचय देंगे।

'हिन्दी दिवस' की हार्दिक शुभकामनाएं।

(डा0 आर.पी.दूबे)
वरि. कार्यकारी निदेशक (प.,बं. एवं अं.ज.)
एवं सदस्य, संपादन मंडल
'वाप्कोस दर्पण'

दो शब्द

भारत में हिन्दी प्राचीनकाल से जन-जन की भाषा रही है और राष्ट्रीय एकता के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम कर रही है। भारत का विविध भाषा सौन्दर्य अनुपम है। यह हमारी भावनाओं को सहज रूप में अभिव्यक्त करने का सक्षम माध्यम है।

आज सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है और विश्व के कई विद्यालयों में हिन्दी पढ़ी और पढ़ाई जा रही है। हिन्दी की उदार प्रवृति ने अंग्रेजी व अन्य भाषाओं के कई शब्दों को अपनाकर आत्मसात कर लिया है। कार्यालय के कार्यों में हिन्दी के उपयोग की कई संभावनाएं हैं और यह सर्वविदित है कि भाषा प्रयोग से ही सशक्त होती है। कोई भी भाषा केवल गर्भगृह से नहीं अपितु विभिन्न क्षेत्रों में जब उसका प्रवेश होता है तभी उसका प्रचार-प्रसार होता है और बढ़ती चली जाती है।

हमारा देश बहु-भाषी है, जहां कई संस्कृतियां विद्यमान हैं और हिन्दी एक सेतु के रूप में कार्य कर रही है। हमारा कार्यालय जिस प्रकार अपने कार्यों के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ रहा है, हमें उसी प्रकार राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी अग्रसर होना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम अपने सार्थक एवं सामूहिक प्रयासों से अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेंगे।

आइए, इस सुअवसर पर हम पूरे वर्ष अधिक से अधिक कार्य अपनी राजभाषा हिन्दी में करने का संकल्प लें।

'हिन्दी दिवस' की शुभकामनाओं के साथ,

(अमिताभ त्रिपाठी)
वरि.कार्यकारी निदेशक (बांध व जलाशय)
एवं तकनीकी संपादक
'वाप्कोस दर्पण'

संपादकीय

गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' का राजभाषा विशेषांक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे बड़े हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा हिन्दी में भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति करना आसान है। देवनागरी लिपि की अपनी ही विशेषताएं हैं। इसका जैसे उच्चारण किया जाता है वैसे ही लिखा जाता है। यह बहुत ही सरल व उदार है।

भाषा की कसौटी उसकी अर्थ-निष्पादन शक्ति है। हर शब्द के भीतर एक अर्थ समाहित है। कोई भी भाषा गर्भगृह में नहीं बढ़ती बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश से इसका प्रचार-प्रसार होता है। जिस प्रकार सृजनात्मकता की कोई सीमा नहीं होती, उसी प्रकार भाषा प्रयोग भी बढ़ने से निरंतर बढ़ता जाता है। संचार माध्यमों से हिन्दी भाषा बड़ी तेजी से सरलीकरण की ओर जा रही है। हमें इसे अपने मन की भाषा बनाना होगा तभी हिन्दी का प्रसार मन के अनुसार होगा।

हमारे कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है और हिन्दी प्रगति के पथ पर अग्रसर है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का उतना ही महत्व है जितना अन्य कार्यों का। कार्यालय के कामकाज में हिन्दी के प्रयोग की सतत् वृद्धि इसका सुपरिणाम है। सूचना क्रांति के इस युग में अपने विकास को कायम रखने के लिए आधुनिक सुविधाओं के उपायों से हिन्दी को आगे बढ़ाना होगा।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका भी ऐसी उर्वरक भूमि तैयार करेगी जिसमें हिन्दी पुष्पित व पल्लवित होकर अपनी सुगंध से कार्यालय के कामकाज को महकाएगी।

'हिन्दी दिवस' के इस सुअवसर पर मैं आप सभी को अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देती हूं।

(निम्मी भट्ट)
प्रमुख (रा.भा.का.)
एवं संपादक 'वाप्कोस दर्पण'

राजभाषा गतिविधियां

- स्कोप सीसी एक्सीलेंस अवार्ड-2019 के अन्तर्गत वाप्कोस लिमिटेड को त्रैमासिक गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" को बेस्ट हाउस जर्नल (हिंदी) केटेगरी हेतु तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 2-3 अगस्त 2019 को स्कोप कन्वेंशन सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली में आयोजित "कार्पोरेट कम्युनिकेशन सम्मिट 2019 में डा0 बी.पी.सिंह पूर्व राज्यपाल, सिक्किम व पूर्व गृह सचिव, भारत सरकार से ग्रहण किया गया।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु उप प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 20.08.2019 को वाप्कोस के जल प्रबन्धन प्रभाग तथा दिनांक 30.08.2019 को बांध व जलाशय प्रभाग के राजभाषाई निरीक्षण किये गए।

- दिनांक 12.9.2019 को हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय की सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (रा.भा.) श्रीमती वीना सत्यवादी ने उपस्थित कार्मिकों को राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा नियम/अधिनियम के बारे मे जानकारी दी।

- दिनांक 16.9.2019 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु उप प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 09.09.2019 को वाप्कोस के पर्यावरण व निर्माण प्रबन्धन प्रभाग का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय की दिनांक 30.09.2019 को आर्थिक सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

****

वाप्कोस में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

- वाप्कोस में अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक के मार्गदर्शन में 02.09.2019 से 16.09.2019 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। कम्पनी के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें ताकि भविष्य में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कम्पनी में अनुकूल वातावरण बनाया जा सके। हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई:-
    - हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
    - चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता
    - राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता
    - श्रुतलेख प्रतियोगिता (केवल समूह "घ" कर्मचारियों के लिए)

  उक्त प्रतियोगिताओं में काफी कार्मिकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन अवसरों पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय से भी अधिकारियों को मार्गदर्शन के लिए बुलाया गया।

- हिन्दी पखवाड़े के दौरान उक्त प्रतियोगिताओं के अलावा निम्नलिखित दो योजनाएं भी लागू की गई:-
    - विशेष अल्पकालिक राजभाषा नकद पुरस्कार योजना (टिप्पण/लेखन)
    - हिन्दी आशुलिपि/हिन्दी टंकण में कार्य करने की विशेष अल्पकालिक नकद पुरस्कार योजना।

- हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर वाप्कोस के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की ओर से एक **"सन्देश"** भी जारी किया गया।

- दिनांक 12.09.2019 को हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षणविभाग, जल शक्ति मंत्रालय की श्रीमती वीना सत्यवादी, सहायक निदेशक (रा.भा.) भी उपस्थित थी जिन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा नियम/अधिनियम के बारे मे जानकारी दी।

- दिनांक 16.09.2019 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

****

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरूग्राम की दिनांक 31.07.2019 को आयोजित बैठक

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरूग्राम की अध्यक्षता में दिनांक 31.07.2019 को दोपहर 3.00 बजे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरूग्राम की वर्ष 2019 की प्रथम बैठक भारतीय खाद्य निगम, गुरूग्राम में आयोजित की गई। बैठक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से उप निदेशक (कार्यान्वयन), निदेशक, भारतीय खाद्य निगम और सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख/प्रतिनिधि व राजभाषा अधिकारी उपस्थित हुए। बैठक में कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के संबंध में विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। अध्यक्ष, नराकास ने उपस्थित कार्यालय प्रमुखों से आग्रह किया कि वे अपने रोज के कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करके अपने अधिकारियों को भी मूल रूप से हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित करें और हिंदी के प्रचार प्रसार में अपना योगदान दें।

******

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली (उपक्रम-2) के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली (उपक्रम-2) के तत्वावधान में दिनांक 22-23 अगस्त, 2019 को कॉस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया, नई दिल्ली में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान **वाप्कोस लिमिटेड** को राजभाषा प्रदर्शनी में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु **'उत्कृष्टता प्रमाण पत्र'** प्रदान किया गया। हिन्दी अनुभाग से प्रमुख (रा.भा.का.) श्रीमती निम्मी भट्ट के साथ श्री डी.के.सेठी, उप प्रबंधक (रा.भा.का.), श्रीमती गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक (हिन्दी) और सुश्री स्वाति डांगी, अनुवादक ने भाग लिया।

गीता शर्मा
सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

****

हिन्दी सिर्फ हमारी भाषा नहीं, हमारी पहचान भी है।
तो आइए हिन्दी बोलें, हिन्दी सीखें और हिन्दी सिखाएं।।

'सूचना प्रौद्योगिकी की उपलब्धियां'

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध)

रवि प्रकाश गुप्ता
अभियंता, बी.डी. प्रभाग

सूचना, बातचीत, प्रेषण संप्रेषण आदि सबका नाता मनुष्य व अन्य जीव-जंतु यहां तक की सभी प्राकृतिक जीवित वस्तुओं से है। यदि हम मानव विकास से सूचना के आदान-प्रदान का कार्यकाल देखें तो दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। जहां-जहां मनुष्य रहा है या रहता है वहां सूचनाओं का आदान-प्रदान निश्चित है। चाहे वह कितने दूर हों, चाहे वह बोलने में सक्षम हो या अक्षम परन्तु वो वार्तालाप का माध्यम खोज ही लेते हैं और मानव समाज की इन्हीं खोजी प्रवृति ने सूचना प्रौद्योगिकी को जन्म दिया। यदि हम आज और अतीत की तुलना करें तो हमें सूचना के क्षेत्र में बहुत सी भिन्नताएं नजर आएंगी परन्तु प्रत्येक काल में मनुष्य का प्रयास वार्तालाप और आदान-प्रदान को सहज करने में ही रहा है।

यदि हम वर्तमान समय की सूचना प्रौद्योगिकी पर चर्चा करें जोकि आज का निबंध लेखन का विषय भी है, तो मनुष्य के दैनिक जीवन का कोई भी पल सूचना प्रौद्योगिकी से अछूता नहीं दिखाई देता। वर्तमान परिवेश में हम सुबह जागने से लेकर रात में सोने तक अनगिनत कार्य करते होंगे परन्तु उन कार्यों में या तो पूर्णता या आंशिक तौर पर वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी का सहारा लेना ही पड़ता होगा। यदि वर्तमान स्वरूप पर अध्ययन किया जाये तो पता चलता है कि सूचना प्रौद्योगिकी का जन्म कम्प्यूटर के जन्म के बाद हुआ। अत: सूचना प्रौद्योगिकी का मूल आधार कम्प्यूटर (संगणक) ही है, मोबाइल को भी कह सकते हैं क्योंकि यह स्मार्ट फोन भी कम्प्यूटर का अनुज ही है।

भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का जन्म 1960-70 के दशक से प्रारंभ हुआ और अधिकतर विकास 1990-2000 के दशक में हुआ और तब से निर्बाध रूप से होता ही चला आ रहा है। मुख्य विकास 90 के दशक में वैश्वीकरण के काल में हुआ और उसके तदुपरांत सूचना प्रौद्योगिकी के विकास में तेजी आई। आज भारत विश्व का इस क्षेत्र में सबसे बड़ा निर्यातक है। सूचना प्रौद्योगिकी के मुख्यत: दो आधार स्तंभ हैं : (1) बी.पी.ओ. और (2) सूचना प्रौद्योगिकी सेवायें।

भारत की जी.डी.पी. यानि सकल घरेलू उत्पाद में बी.पी.ओ. का हिस्सा करीब 6 से 7 प्रतिशत का है और सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं का 30 से 40 प्रतिशत के मध्य में रहता है। इसका तात्पर्य

यह है कि भारत के विकास में व्यावहारिक तरीकों से भी सूचना प्रौद्योगिकी बहुत महत्वपूर्ण है। अब यहां यह चर्चा करना आवश्यक हो जाता है कि सूचना प्रौद्यागिकी ने मनुष्य के जीवन में क्या कमाल किया है। यहां श्रेणीवार कुछ क्षेत्र निम्नलिखित हैं जिसमें मनुष्य और राष्ट्र का सूचना प्रौद्यागिकी ने कल्याण किया है :-

- कृषि के क्षेत्र में
- व्यापार के क्षेत्र में
- बैंकिंग के क्षेत्र में
- भाषा के क्षेत्र में
- प्रेषण-संप्रेषण के क्षेत्र में
- राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में
- शिक्षा के क्षेत्र में
- स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में
- परिवहन के क्षेत्र में
- अंतरिक्ष के क्षेत्र में
- मौसम विज्ञान के क्षेत्र में
- मनोरंजन एवं कला के क्षेत्र में
- अन्य सभी सरकारी सेवाओं के क्षेत्र में इत्यादि

कृषि के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से किसान मोबाइल/कम्प्यूटर/इंटरनेट के द्वारा बारिश, सूखा, बाढ़, फसलों के दाम मंडियों की हालत या भाव सब कुछ जान सकता है। ऑनलाइन मृदा स्वास्थ्य कार्ड से उसे यह भी पता चल जाता है कि उसे कब और कितना उर्वरक प्रयोग करना है। किसी भी तरह की प्राकृतिक आपदाओं का पता चल जाता है।

व्यापार के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से बहुत तेजी आई है और व्यापार सुगम भी हुआ है। ई-कामर्स से खरीद बिक्री और भी आसान हुआ है। E-Gem या CPPP के जरिये सरकारी खरीद फरोक्त भी काफी आसान और पारदर्शी हुआ है।

बैंकिंग के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग की जितनी व्याख्या करो उतना कम ही पड़ेगा। घंटों-घंटों की लाइन खत्म हो कर अब सैकेण्ड में कार्य होता है। घर बैठकर ग्राहक बैंकों में लेन-देन कर सकता है। एटीएम, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, ऑनलाइन भुगतान सब कुछ सूचना प्रौद्योगिकी से ही संभव हुआ है।

भाषा के क्षेत्र में आज हम किसी भी भाषा में आसानी से पढ़ लिख सकते हैं।

कम्यूनिकेशन के क्षेत्र में आज हम सूचना प्रौद्योगिकी के वरदान द्वारा सात समुन्द्र पार बैठे अपने मित्रों, रिश्तेदारों आदि से बात कर सकते हैं और व्यापारिक क्रिया कलाप भी बहुत सुगमता से हो रहा है।

सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से आज राष्ट्रीय सुरक्षा ओर भी मजबूत हुई है। कृत्रिम उपग्रहों के माध्यम से सीमाओं की निगरानी से लेकर मानवरहित यान, ड्रोन इत्यादि सब संभव हुआ है।

ऐसे ही शिक्षा के क्षेत्र में भी सूचना प्रौद्योगिकी विद्यार्थियों के लिए वरदान है। ऑनलाइन वीडियो कक्षाएं, वार्तालाप सब संभव हुआ है। MOOC (Massive Online Open Classes) के माध्यम से प्रतिष्ठित प्रोफेसर की कक्षा में भी पढ़ाई की जा सकती है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में टेलीमेडिसिन तो भारत में किसी वरदान से कम नहीं है। मौसम विज्ञान में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से आज हम प्राकृतिक आपदाओं से बच सकते हैं। आधार कार्ड, डी.बी.टी. आदि सरकारी पहलों से सरकारी कामकाज आसान हो गया है। आज ई-गवर्नेंस के माध्यम से शिकायत और उनका निस्तारण हो रहा है।

परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी जहां वरदान साबित हो रही है वहां निजता और साइबर सिक्योरिटी पर एक बड़ा प्रश्न भी खड़ा किया है। सूचना प्रौद्योगिकी के गलत इस्तेमाल से निजता का हनन, असामाजिक तत्वों का आदान-प्रदान, दंगे, विरोध प्रदर्शन आदि में तेजी आयी है। साइबर सिक्योरिटी भी आज एक बहुत बड़ा खतरा बन गया है। एक मजबूत साइबर सिक्योरिटी तंत्र की नितांत आवश्यकता है।

सारांश में यह कहा जा सकता है कि सूचना प्रौद्योगिकी मनुष्य के लिए वरदान तो है परन्तु इसका अनुचित और गलत प्रयोग मानव के लिए विनाशकारी भी हो सकता है। जरूरत यह भी है कि हम समार्टफोन, इंटरनेट आदि सूचना के माध्यमों के दास न बने, नहीं तो यह मानव सभ्यता के लिए हानिकारक होगा। हमें सूचना के माध्यमों को अपना दास बनाकर रखना है तभी यह मनुष्य के लिए उपयोगी रहेगा।

****

हम सबका अभिमान है हिन्दी, भारत देश की शान है हिन्दी
हिन्दी अपनाओ, देश का मान बढ़ाओ।

****

गर्व हमें है हिन्दी पर, शान हमारी हिन्दी है,
कहते-सुनते हिन्दी हम, पहचान हमारी हिन्दी है।

"मोबाइल के दुष्परिणाम"

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)

विनय शंकर
अभियंता प्रशिक्षु (बांध व जलाशय)

"पढ़ोगे-लिखोगे, बनोगे महान" बचपन से ऐसी कई लोकोक्तियां हम अपने आस-पास से अक्सर सुनते आए हैं। समाज में जब भी किसी का उदाहरण दिया जाता तो अक्सर यही कहते हैं हमारे बुज़ुर्ग कि फलां इस विषय में अव्वल आया, फलां ने इस खेल में ट्राफी जीती है। लेकिन आज के युवा अलग ही उदाहरण के शिकार हैं। फलां के इतने फेसबुक फ्रैंड हैं, फलां ने इतने लाइक्स् बटोर लिए और इन सब चीजों के पीछे एक वजह है हमारे इलैक्ट्रोनिक्स उपकरण और उसमें समाहित विभिन्न माध्यम। आज का युवावर्ग एक क्षणभंगुर मायावी पहचान के पीछे पड़ा है चाहे वह किसी सोशल मीडिया के जरिए हो या किसी प्रचलित गेम के जरिए। इन सब के बीच उन्हें अहसास ही नहीं कि एक सीमा से इन चीजों का अधिक उपयोग न केवल उनकी आंखों और बैठने के तरीकों को प्रभावित कर रहा है, बल्कि साथ ही साथ उन्हें सामाजिक तौर पर दूर ले जा रहा है। आए दिन हमें अक्सर देखने-सुनने को मिलता है कि एक ही घर के चार-पांच सदस्य, सभी अपने-अपने उपकरणों में व्यस्त हैं, एक दूसरे के लिए समय ही नहीं है किसी के पास।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और इस चित्र में उस सामाजिक मूल्यों का हनन साफ दिख रहा है, खासकर कि हमारी नई पीढ़ी के लोगों पर। आज माता-पिता इनते व्यस्त हैं कि वो अपने बच्चों को काफी कम उम्र में ऐसे उपकरण पकड़ा देते हैं जो आगे चलकर एक बुरी लत का रूप ले लेती है। साथ ही साथ उनके मानसिक और शारीरिक विकास में बाधक बनती है।

मानवीय मूल्यों का सबसे जीवांत उदाहरण और क्या हो सकता है कि कभी कोई व्यक्ति दुर्घटनाग्रस्त होता है तो लोग उसकी मदद करने की बजाय वहां पर खड़े होकर वीडियो बनाने और फोटो खीचने में मग्न हो जाते हैं।

हमें यह ध्यान रखना होगा कि कहीं इसका अधिकाधिक उपयोग हमें अपनों से दूर न कर दे। हमें एक सीमा में रहकर इसका इस्तेमाल करना चाहिए और अपने से छोटों को भी यह बातें सिखानी चाहिए कि हमें तकनीकी विकास के साथ-साथ अपने मानवीय मूल्यों को भी साथ लेकर चलना होगा।

****

मैं नन्हीं सी बूंद हूं

चिराग सूद
अभियंता प्रशिक्षु, भोपाल कार्यालय

मैं नन्हीं सी बूंद हूं, जो मिल जाऊं तुम से
तो मैं कल-कल, चंचल चलता स्त्रोत हूं।
मैं नन्हीं सी बूंद हूं, जो मिल जाऊं तुम से
तो मैं तुम्हारी ओट, कलकल बहती धारा हूं।
मैं नन्हीं सी बूंद हूं, जो मिल जाऊं तुम से
तो की तुम ने संग्रह धारा, मैं नन्हा सरोवर हूं।
मैं नन्हीं सी बूंद हूं, जो मिल जाऊं तुम से
सरोवर मे मिली पवित्र धारा, मैं सुन्दर प्रपात हूं।
मैं नन्हीं सी बूंद हूं, जो मिल जाऊं तुम से
सुन्दर वन ऊपवन से, जो श्रृंगार किया तुमने
तो मैं, पावन पवित्र नदी की धारा हूं।
मैं नन्हीं सी बूंद हूं, जो मिल जाऊं तुम से
तो श्रृंगार पूर्ण हुआ, तुम्हारा
मिली शांत सागर से, मैं नन्हीं सी बूंद हूं।

*****

सीसी एक्सीलेंस अवार्ड-2019

वाप्कोस को स्टेंडिंग कान्फ्रेंस ऑफ पब्लिक इंटरप्राइजेस, सार्वजनिक उद्‌यम की शीर्ष निकाय द्‌वारा संस्थापित स्कोप निगमित संचार पुरस्कार 2019 के अंतर्गत निम्नलिखित श्रेणी में पुरस्कार प्रदान किए गए :-

'संकट से निपटारा' श्रेणी में प्रथम पुरस्कार

"श्रेष्ठ हाउस जरनल (हिन्दी)" श्रेणी में तृतीय पुरस्कार

"श्रेष्ठ निगमित संचार अभियान व कार्यक्रम - बाहरी संचार" श्रेणी में प्रथम पुरस्कार

•••••••

पानी आस है पानी प्यास है

रूमा सिद्दीकी
ऑटोकैड विशेषज्ञ, भोपाल कार्यालय

आज जो पास है पर शायद कल बन सकती है एक तलाश
पानी आस है पानी प्यास है!!
धरा और गगन को जोडे पानी वो प्रयास है
हर जगह आम है, फिर भी खास है
पानी जीवन का एहसास है सरल होकर भी विरल है
कभी अमृत है तो कभी गरल है निराकार होकर भी इसका आकार है
पानी ऊर्जा-स्फूर्ति का आधार है पंचतत्व का ये अहम किरदार है
जीवन के लिए अनिवार्य है इससे पत्ता-पत्ता, डाली-डाली है
हरियाली है, खुशहाली है पानी का होता है ना कोई रंग
पर ये रंगों का है अभिन्न अंग
चले जीवन इसके संग, पानी के हैं अपने ढंग
कहीं बहता ये निर्झर कहीं फैला है,
सिर्फ रेत और सूखे का मंजर, बिन इसके जमीनें पड़ जाती हैं बंजर
करते हैं लोग मिन्नतें और प्रार्थना होकर बेकल इसका कतरा भी पाने को
और जहां ये मिलता है आसानी से
वहाँ लोग कतराते भी नहीं इसे बेवजह बहाने को
कई संस्कृतियों ने पानी को दिया सर्वोच्च स्थान है
मगर फिर भी मनुष्य इसके महत्व से नजर आता अनजान है
पूरी मानवता जिसके गुणों से पोषित है
आज वही पानी उनसे ही प्रदूषित है
ऐसा नही कि इसके महत्व से कोई अनभिज्ञ है
पर दुनिया अपनी जरूरतों में ही लिप्त है
यही जो रहेगी दशा तो आने वाले कल में होगी बहुत दुर्दशा
रवैया बदलने की जरूरत है अब आन पडी
चेतावनी दे रही प्रकृति भी घड़ी-घड़ी
पानी जो जगाए नवचेतना, थोड़ी तो इसके प्रति भी हो संवेदना
आज जो पास है पर शायद कल बन सकती एक तलाश है
पानी आस है, पानी प्यास है!!

****

जाति या मानसिकता

विमल किशोर
प्रारूपकार, जल संसाधन विकास

सबसे पहले तो मैं ये साफ कर देना चाहता हूँ कि इस लेख को पढ़ने से पहले जातिगत मानसिकता, वर्गीय विचारधारा या कोई भी जातिसूचक शब्द, अपने मस्तिष्क से अलग निकाल कर रख दें, क्योंकि मेरा इस लेख को लिखने का अभिप्राय ही इस भावना से प्रेरित है कि जाति शब्द, मनुष्य-समुदाय हेतु इस्तेमाल करना ही निरर्थक है। मनुष्य अपने बुद्धि उपयोग के एक उच्च स्तर पर खड़ा है और इस स्तर पर जातिगत सोचना या जातिवाचक शब्द किसी अन्य के लिए इस्तेमाल करना मैं एक अतार्किक व अत्यंत मूर्खता का काम समझता हूँ। वही मूर्खता, जिसके बल पर कई विलक्षण बुद्धिजीवी अपनी स्वार्थपूर्ति सदियों से सरेआम करते आए हैं।

जाति-वर्ग व्यवस्था सदियों से भारत-वर्ष में व्याप्त है। इसलिए हमें उस इतिहास को छूना आवश्यक हो जाता है जिस दौरान इस तथाकथित व्यवस्था का श्रीगणेश हुआ। इस तथ्य का शायद ज़िक्र करना भी ज़रूरी नहीं कि राजमहल से जुड़े लोग क्षत्रिय कहलाए, ज्ञानी वर्ग-ब्राह्मण, व्यवसाय से जुड़े लोगों को वैश्य बताया गया और सभी निम्न कौटि के कार्य शूद्र जाति के लोग करते आए। यह हम सभी के लिए हार्दिक सम्मान का विषय है कि प्राचीन भारत में भी आज ही के समान बुद्धिजीवी, कलात्मक व हुनरमंद लोग मौजूद थे। उदाहरण के तौर पर सुरेन्द्र नाथ गुप्त जी द्वारा लिखित किताब '**सोने की चिड़िया और लुटेरे अंग्रेज़**' में यह प्रामाणिकता व विस्तार के साथ बताया है कि किस तरह भारत को सम्पूर्ण विश्व की औद्योगिक कर्मशाला और व्यापारिक धूरी होने का सुयोग्य यश प्राप्त था। इतिहास पढ़ चुके सभी बुद्धिजीवी समझतें हैं कि अंग्रेजों की गुलामी और उनसे पहले आए लुटेरों की लूटों से पहले, भारत को सोने की चिड़िया क्यों कहा जाता था। भारत सुसंस्कृत, सुदृढ़ व धन-धान्य से लबालब था। विदेशी अपने देशों के रत्न व अन्य कीमती सामान के बदले में यहाँ की खूबसूरत कारीगरी के ख़रीदार बने।

परंतु हम भारतीय आरंभ से ही विभाजित रहे। और इस विभाजन का मुख्य कारण था-अपने छोटे-छोटे स्वार्थों की पूर्ति। हम लोग व्यवसाय में निपुण थे, कला में निपुण थे, व्यवस्था में भी निपुण थे। हमारी सामरिक क्षमता से विश्व कांपता था। हमारी योजना से विदेशी घबराते थे। लेकिन फिर क्यों हमें तुर्क लुटेरों ने लूटा? क्यों हमें मंगोलों ने लूटा? क्यों हम अफगानों का सामना नहीं कर पाये? और क्यों भारतीय विशाल सैन्य-सामर्थ्य के सामने मुट्ठी भर अंग्रेजों ने हमारी ही धरती पर हमें गुलाम बनाया? इन सभी सवालों की तह में जाने पर एक ही जवाब मिलता है कि हम संगठित नहीं थे। हम लोग शुरू से विभाजित हो कर ही रहे और आज भी

हमारे देश की यही विडम्बना है कि हम प्रदेश, संस्कृति, धर्म या जाति के आधार पर विभाजित हैं।

अहमद शाह अबदाली ने युद्ध के दौरान रात में अपने मुखबिर मराठा सेना के शिविर में भेजे। मुखबिरों ने देखा कि मराठा शिविरों में अलग-अलग जगहों से धुआँ उठ रहा है। पास जाकर देखने पर पता चला कि अलग-अलग जाति-वर्गों के चलते सैनिक अलग-अलग गुटों में खाना बनाकर खा रहे थे। मुखबिरों ने वापिस जाकर जब शाह को यह बात बताई तो शाह बोला-" जो साथ बैठ कर खा नहीं सकते, वो साथ-साथ लड़ेंगे क्या? शाह बोला "अब हमारी जीत पक्की है"। और सच में ही अहमद शाह अबदाली ने सन 1761 में पानीपत के उस युद्ध को जीता। जब भी किसी बाहरी ताक़त ने भारत को लूटने की हिम्मत दिखाई तो उसने अपना सब से बड़ा हथियार हिंदुस्तानियों की फूट को ही बनाया।

हमारे देश में आए हुए हर लुटेरे ने इस फूट को पहली नज़र में ही भांप लिया और इसी के उपयोग के बल पर हमें लूटा, शोषण किया और राज किया। तुर्कों, अफगानों, और मंगोलों ने हमें लूटा। यहाँ तक की पारसियों ने भी व्यावहारिक कमियों के चलते ही हमें परास्त किया। लेकिन अंग्रेजों ने इस फूट का योजनागत तरीके से दीर्घकालिक लाभ उठाया। उन्होनें इस कार्य-व्यवस्था को जाति-व्यवस्था में बेहद गहराई तक बदल दिया। उन्होनें इस व्यवस्था को सम्मान व अपमान का प्रश्न बना दिया। जो उनके काम का था उसे सम्मानित और जिनका शोषण करना था उनको अपमानित करने का यह एक आधिकारिक तरीका हो गया। अंग्रेजों को मूल-रूप से भारत को औद्योगिक राष्ट्र से एक कृषि राष्ट्र बनाना था। क्योंकि वे खुद एक कृषि राष्ट्र थे और उद्योग-सम्पन्न बन नहीं पा रहे थे। जाति-व्यवस्था स्थापित करना, इस रास्ते में एक मील का पत्थर साबित हुई। अंग्रेजों ने भारतीयों के जीवन के हर पहलू को अपनी ज़रूरत के हिसाब से बदल दिया। उन्होने हमारे व्यवसाय का हनन किया। हमारी शिक्षा व्यवस्था बदल दी और यहाँ तक कि हमारे रीति-रिवाजों तक को अपने फायदे के लिए गढ़ दिया, जिसमें जाति-प्रथा को बढ़ावा देकर लोगों में फूट को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाना मुख्यतः शामिल था, और इस तरह ये भारतीय माहौल में पूरी तरह घुल गया।

दरअसल विदेशी जानते थे कि मनुष्य का वर्गीकरण अतार्किक है। वर्गिकरण जानवरों का होता है। उनके रूप-रंग और क्षमताओं के आधार पर। मनुष्य जाति का वर्गीकरण या तो एक स्वार्थी सोच का परिणाम हो सकता है या फिर अपरिपक्व व्यवस्था का। भारत में वर्ग-व्यवस्था, कार्य-प्रणाली के व्यवस्थिकरण के लिए बनाई गयी या स्वयं ही बन गयी। ताकि अपनी-अपनी निपुणता के गणित पर सामाजिक व्यवस्था काम कर सके और हर कार्य में बेहतर गुणवत्ता मिल सके। यह सामाजिक व्यवस्था किसी के अपमान या सम्मान की परिचायक नहीं थी। बल्कि कार्य-विशेष की

परिचायक थी। जैसे कास्तकार, बढ़ई, मोची या दर्जी। भारत धनाढ्य था, कोई गरीब तो था ही नहीं। राजा भी यहाँ पर साधुत्व ग्रहण कर भिक्षा गृहण करते थे। कोई भी अपने कार्य से परेशान नहीं था तो फिर जातिगत श्रेष्ठता का तो सवाल ही कहाँ था?

किसी भी इंसान का व्यक्तित्व सिर्फ तीन बातों पर निर्भर करता है।

1. उसके माता-पिता का मूल-व्यक्तित्व कैसा रहा।
2. वह कैसे माहौल में पला-बढ़ा और
3. किन मूल्यों का सम्मान करते हुए वह वयस्क हुआ।

'किसी भी जाति-विशेष का होने की वजह से कोई भी इंसान सम्मान या अपमान की दृष्टि का पात्र हो जाता है', ये विचारधारा स्वार्थ से ओत-प्रोत, अपरिपक्व व हास्यास्पद है। ये पूरी तरह से अतार्किक है। यह वो विक्षिप्त मानसिकता है, जिसने सदियों से हमें स्वयं के हनन के लिए प्रस्तुत किया और आज भी हमारे देश की प्रगति में बाधक है। अगर एक ही परिवार के सदस्य एक-दूसरे के प्रति दुर्भावना रखें, तो क्या उस परिवार का पतन निकट नहीं? इसी तरह हमारा देश आज भी कई समुदायों में बंटा हुआ है, जिसके रहते आज भी हम लोग अपने देशवासियों के प्रति समभाव नहीं रख पाते। बड़ा सवाल ये नहीं कि कौन किसे दोयम दर्जे का महसूस कराता है या कौन अपने पूर्वजों की रीत निभाते हुए, उस व्यवहार को पी जाता है? बड़ा सवाल यह है कि इसमें सारांश रूप में नुकसान किसका है? और जवाब है, हमारे समाज का, हमारी अर्थव्यवस्था का, हमारी भारतीयता का और हमारे देश का!

आज का समाज बदल चुका है। हमारे जीने और सोचने के माप-दंड बदल चुके हैं। नयी मान्यताएँ विकसित हो चुकी है। जीने का ढंग बदल चुका है। आज सूचना विज्ञान की दुनिया है। उपभोक्ता-उत्पादक के रिश्ते की दुनिया है। कार्यकुशल मानव-संसाधन की दुनिया है और देश व विदेशों के अंतर को निरंतर कम करती आविष्कारों की दुनिया है। आज के समाज में राजाओं के वंशज भी शायद उसी पद पर कार्यरत हो सकते हैं जिस पर किसी शूद्र का वंशज या फिर किसी किसी ब्राहमण का वंशज या फिर यह भी होता है कि एक निम्न जाति का मनुष्य उच्च पद पर आसीन हो। उस समय हमें जाति-नियम याद नहीं रहते या फिर पैसे और कुर्सी का प्रभाव हमें सारे नियम भुला देता है!

सम्मान, गुणों और उपलब्धियों के आधार पर दिया जाना चाहिए, जाति के आधार पर नहीं। व्यक्तित्व, मनुष्य की पहचान है, जाति नहीं। गौद लिए हुए बच्चे की जाति किसको पता होती है? और एक सफल इंसान से उसकी जाति कौन पूछता है? आज की दुनिया में अपडेट बने रहने के लिए, आज की दुनिया की तरक्की में भागीदारी के लिए और इस नयी दुनिया का भरपूर आनंद लेने के लिए, हमें अपनी पुरानी कुछ रीतियों का साथ छोडना ही पड़ेगा, जिसमें जाति-पाती के भेद को भुलाकर, संगठित हो जाना बेहद आवश्यक है।

विश्व के विकसित देश, शायद इसलिए इतनी तरक्की कर पाये, क्योंकि वहाँ कुरीतियों की बाधाएँ नहीं। वहाँ जीवन को संकुचितता देने के बजाए स्वतन्त्रता के साथ ज़िम्मेदारी उठाना सिखाया जाता है। वहाँ भेद-भाव नहीं, बल्कि संगठन और सहभागिता पर आधारित व्यवस्थाएँ हैं। ये कहना गलत होगा कि भारतीय संस्कार पद्धति में खोट है लेकिन यह स्वीकारना भी ज़रूरी है कि हमारी निकट पीढ़ियों ने कई अर्थपूर्ण रीति-रिवाजो का अपूर्ण या असंगत प्रचलन चला कर, उन वैज्ञानिक पद्धितियों को अंध-विश्वास और कुरीतियों में तब्दील कर दिया है और आज की पीढ़ी के लिए कई रीति-रिवाज एक बोझ या मजबूरी बन चुके हैं। इसका मुख्य कारण लंबे समय तक अंग्रेजों द्वारा भारतीयों का मानसिक शोषण भी हो सकता है या फिर अचानक मिली आज़ादी की अनुभूति में असंतुलित विचारधारा भी।

लेकिन आज हम फिर से संबल हैं। आज भारत-वर्ष ने इतनी तरक़्क़ी कर ली कि हम सुई से लेकर जहाज़ तक बनाते हैं। आज हमारे अभियंता, चिकित्सक आदि पूरे विश्व में मान्यता प्राप्त है। भारतीय कार्यकुशलता का लोहा माना जाता है। हमारे खिलाड़ी विश्व में नाम रोशन कर रहे हैं और हमारी अर्थव्यवस्था निरंतर दुनिया की पाँचवी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। लेकिन जाति-भेद की घुन आज की युवा पीढ़ी में भी कहीं न कहीं व्याप्त है।

निश्चित तौर पर शिक्षा व शहरीकरण ने जाति-भेद के दुष्प्रभाव को काफी हद तक धूमिल किया है लेकिन ये भी देखना ज़रूरी है कि आज हमारा देश विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होने जा रहा है। फिर भी आज़ादी के 69 सालों बाद भी हमारी जाति हमारी पहचान बनी हुई है। ये तथ्य बेहद विचारणीय है कि जब हम व्यक्तिगत तौर पर इतनी तरक्की कर सकते हैं तो संगठित तौर पर दुनिया से आगे निकलना कितना सरल हो जायेगा? कहा भी जाता है कि 86000 अलग-अलग जीवों या वृक्षों के शरीरों से होते हुए मनुष्य-जन्म प्राप्त होता है। शायद इसका अर्थ यह है कि इस जन्म को जीवों या वृक्षों की तुलना में विशेषतः जीने की हममें भरपूर क्षमता है। लेकिन इस जीवन को भी हम ईर्ष्या या द्वेष जैसी दुर्भावनाओं के साथ व्यर्थ करने को आतुर रहते हैं।

आवश्यकता है कि मनुष्य के व्यक्तित्व को प्राथमिकता दी जाए न कि उसकी जाति को। आज का शिक्षित व्यक्ति कहीं न कहीं यह जानता है कि जाति-भेद महज एक विक्षिप्त मानसिकता है। लेकिन उसकी भारतीय मानसिकता में बोया गया बीज़, उसको यह स्वीकारने नहीं देता। इसलिए आवश्यकता है कि सभी भारतीय जाति-वर्ग को भूल, आपस में व्यवहार बढ़ाने की कोशिश करें और एक-दूसरे को वास्तविक मूल्यों पर परखें। ज़रूरी यह नहीं कि हम कल के इतिहास को जिये, ज़रूरी यह है कि हम आज नया इतिहास बनाए।

****

वाप्कोस के क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालयों में दिनांक 02.09.2019 से 16.09.2019 के दौरान आयोजित 'हिन्दी दिवस'/'हिन्दी पखवाड़े' की रिपोर्ट एवं झलकियां

भोपाल कार्यालय

दिनांक 02.09.2019 से 16.09.2019 तक वाप्कोस के भोपाल कार्यालय में **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। इस दौरान निबंध एवं कविता लेखन प्रतियोगिता, चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए श्रुतलेख प्रतियोगिता, नीति ज्ञान प्रतियोगिता, शीघ्र कहानी संरचना और तकनीकी शब्दावली प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। कार्यालय द्वारा दिनांक 14.09.2019 को **हिन्दी दिवस** मनाया गया। इस अवसर पर श्री आर.के.खण्डेलवाल (टीएलई) भी उपस्थित थे। इस दौरान कार्यालय की महिला समूह के द्वारा हिन्दी दिवस पर एक समूह गीत भी प्रस्तुत किया गया तथा डा0 उदय रोमन, परियोजना प्रबंधक के द्वारा स्वरचित कविता का प्रस्तुतीकरण किया गया तथा धन्यवाद भाषण दिया। पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों में सभी कार्मिकों ने बड़े उत्साह के साथ बढ़-चढ कर हिस्सा लिया।

हैदराबाद कार्यालय

वाप्कोस के हैदराबाद कार्यालय में दिनांक 02.09.2019 से 16.09.2019 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर, 2019 को **'हिन्दी दिवस'** का आयोजन किया गया। इस दौरान 'भारत में जन संख्या विस्फोट और उसके दुष्परिणाम' विषय पर हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

पुणे कार्यालय

'हिन्दी दिवस' के अवसर पर दिनांक 14 सितम्बर, 2019 को वाप्कोस कार्यालय, पुणे में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री कृष्ण कुमार गुप्ता, सेवानिवृत्त अनुसंधान अधिकारी, पुणे को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के दौरान श्री कृष्ण कुमार गुप्ता जी ने कहा कि मातृभाषा आंख होती है जबकि पराई भाषा चश्मा। यदि आंख ही न होगी तो चश्मे का क्या महत्व रह जाता है। श्री गुप्ता जी ने जीवन में कुछ

चीजों की महत्ता बताते हुए कहा कि मां, जन्मभूमि तथा मातृभाषा का हमेशा ध्यान रखना चाहिए। समारोह में उपस्थित कार्यालय के शीर्षस्तर सलाहकर श्री नागेन्द्र थाड़ी जी ने हमारे समाज एवं संस्कृति में हिन्दी के प्रति लोगों में कम होती रूचि से कार्मिकों को अवगत कराया, साथ ही अपनी भाषा के प्रति लगाव, उत्साह एवं जागरूकता फैलाने की बात की। अंत में परियोजना प्रबंधक ने हिन्दी भाषा का महत्व समझाया एवं कविताएं प्रस्तुत की और अतिथि महोदय एवं सभी कर्मचारियों का धन्वाद करते हुए कार्यक्रम का समापन किया ।

<u>बैंगलूरू कार्यालय</u>

वाप्कोस के बैंगलूरू कार्यालय में दिनांक 02 से 16 सितम्बर, 2019 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। इस दौरान दिनांक 14.09.2019 को **'हिन्दी दिवस'** मनाया गया तथा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें परियोजना प्रबंधक द्वारा राष्ट्रभाषा का महत्व और इतिहास के बारे में जानकारी दी और कार्यालय के कामकाज में ज्यादा से ज्यादा हिन्दी के इस्तेमाल करने का अनुरोध किया। कार्मिकों ने कार्यालय के विविध विषयों के संबंध में हिन्दी में

वार्तालाप व टिप्पणी आदि का अभ्यास किया और प्रतिदिन कार्यालय का ज्यादा से ज्यादा कार्य हिन्दी में करने का संकल्प लिया।

गांधीनगर कार्यालय

वाप्कोस के गांधीनगर क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 02 से 16 सितम्बर, 2019 तक 'हिन्दी पखवाड़े' का आयोजन किया गया। इस दौरान 14.09.2019 को 'हिन्दी दिवस' का आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस दिन विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता क्षेत्रीय परियोजना निदेशक श्री एस.के. श्रीवास्तव ने की तथा सभा का संचालन हिन्दी प्रभारी श्री कौस्तुब तिवारी, वरि. अभियंता ने किया और सभी कार्मिकों से कार्यालय का अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए आग्रह किया। इस दौरान परियोजना प्रबंधक श्री रजनीकांत जी ने भी कार्यालय में अपने काम-काज व तकनीकी शब्दों को हिन्दी में करने का आग्रह किया। अंत में अध्यक्ष महोदय के समापन भाषण के साथ उपस्थित सभी अधिकारी व कर्मचारीगण का धन्यवाद किया और आगे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रेरणा दी।

अहमदाबाद कार्यालय

वाप्कोस के अहमदाबाद कार्यालय में दिनांक 02.09.2019 से 16.09.2019 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर, 2019 को **'हिन्दी दिवस'** का आयोजन किया गया। इस दौरान हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

कोलकाता कार्यालय

वाप्कोस के कोलकाता कार्यालय में कार्यालय के कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने और उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 02.09.2019 से 16.09.2019 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यालय के परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में निबंध, श्रुतलेख, शब्दावली, चित्र अभिव्यक्ति तथा आशु भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान 14 सितम्बर, 2019 **'हिन्दी दिवस'** के रूप में मनाया गया।

******

घर में क्यों बेगानी हिन्दी?

निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.)

भारतीय संस्कृति अनादिकाल से सभी संस्कृतियों के सद्‌गुणों को अपने में समाहित करती रही है, वही कार्य हिन्दी भाषा का भी है। हिन्दी दिमाग नहीं दिल की भाषा है और बड़ी ही सरल, सहज है। आज आप विश्व में कहीं भी रहें, एक-दूसरे से जुड़े हैं।

भारतीय केवल भारत तक ही सीमित नहीं है। आज विश्व के हर देश में भारतीय प्रतिष्ठित है और अपनी प्रतिभा के बल पर हर क्षेत्र में झंडे गाड़ रहे हैं। आंकड़ों पर विश्वास किया जाए तो अधिकतर देशों में भारतीय वहां की आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित कर रहे हैं। विभिन्न देशों में बसे हुए अधिकतर प्रवासी भारतीय आर्थिक और व्यवसायिक रूप से समृद्ध हैं। विदेशों में भारतीयों ने अपनी बहुत ही मजबूत पैठ बना रखी है और हर क्षेत्र में अपनी कार्यकुशलता के बल पर आगे बढ़ रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि चीनी भाषा के बाद हिन्दी विश्व में दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। विदेशों में कई विश्वविद्‌यालयों और स्कूलों में हिन्दी पढ़ी व पढ़ाई जा रही है। भारत वर्ष के अलावा कुछ देशों में हिन्दी को अध्ययन एवं बोलचाल की भाषा के रूप में अत्याधिक प्रयोग किया जा रहा है जैसे :-

<u>**नेपाल**</u> :- नेपाल को भौगोलिक और राजनीतिक दृष्टि से देखें तो यह संप्रभु राष्ट्र है। नेपाल में प्राचीन काल से ही संस्कृत की प्रधानता थी। भारत और नेपाल का पौराणिक काल से संबंध चला आ रहा है। इन देशों की सीमाएं, धार्मिक पर्व, त्यौहार आदि बनाने की पद्धति और शैली में काफी समानता है। यहां हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए काफी हिन्दी प्रेम है। नेपाली भाषा में फारसी, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी व कई अन्य विदेशी शब्दों की प्रचुरता और हिन्दी के समान ही प्रयोग, हिन्दी और नेपाली भाषा जनता को समझने के लिए सहायक रही है। नेपाल के तराई क्षेत्रों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी बना। नेपाली भाषा हिन्दी भाषी पाठकों के लिए सुबोध है। अंतर है तो केवल लिप्यांतरण का। डा0 भवानी भिक्षु प्रख्यात नेपाली लेखक, कहानीकार एवं उपन्यासकार ने तो अपना लेखन का श्रीगणेश हिन्दी से ही किया। कई नेपाली लेखकों, कवियों आदि ने अपनी एक न एक कृति हिन्दी में लिखी है।

<u>**यू.ए.ई.**</u> :- संयुक्त अरब अमीरात सिटी ऑफ गोल्ड दुबई के नाम से पहचाना जाता है। दुबई में इंडो-पाक मुशायरे का आयोजन होता रहता है जिसमें भारत और पाकिस्तान के कवि और शायर भाग लेते हैं। यहां एफ.एम. रेडियों के दो-तीन चैनल 24 घंटे नए व पुराने हिन्दी फिल्मों के गाने सुनाते रहते हैं जिनका आनंद लिया जा सकता है। खाडी देशों की दो हिन्दी पत्रिकाएं अभिव्यक्ति

व अनुभूति जोकि प्रतिमाह विश्व के 7000 से भी अधिक लोगों द्वारा पढ़ी जाती है जोकि हिन्दी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इन पत्रिकाओं की संरचना सही अर्थों में अंतर्राष्ट्रीय है क्योंकि इनका प्रकाशन और संपादन संयुक्त अरब अमीरात से, टंकण कुवैत से, साहित्य संयोजन इलाहबाद से और योजना व प्रबंधन कनाडा से होता है।

<u>मॉरीशस</u> :- यहां कुल आबादी की आधे से अधिक जनसंख्या भारतीय मूल के लोगों की है। चीनर उद्योग के बचाव व विकास के लिए 1834 में भारतीय प्रवासियों का विधिवत आगमन शुरू हुआ था। तत्कालीन प्रशासकों ने यूरोप में चीनी की बढ़ती मांग को देखते हुए भारतीयों को सशर्त यहां लाकर स्थाई रूप से बसाया। यहां की राजभाषा अंग्रेजी है और फ्रेंच लोकाप्रेम है। फ्रेंच के बाद हिन्दी एक ऐसी महत्वपूर्ण एवं सशक्त भाषा है जिसमें पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। वर्ष 1834 से भारतीय मॉरीशस में बंधुआ मजदूर के रूप में आने लगे थे। ये लोग अधिकतर भारत के बिहार और उत्तर प्रदेश आदि जिलों से आए थे। विकट परिस्थितियों के बावजूद इन्होंने अपनी संस्कृति और भाषा को सहेज कर रखा। वर्ष 1901 में महात्मा गांधी के अपने प्रवास काल के दौरान भारतीयों को शिक्षा तथा राजनीतिक क्षेत्रों में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित किया। हिन्दुस्तानी पत्र का हिन्दी प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान है। यहां हिन्दी को धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं के उदय होने से व्यापक बल मिला। हिन्दी प्रचारिणी सभी का मॉरीशस में हिन्दी का स्तर ऊंचा उठाने के लिए योगदान अतुलनीय है जिसे भुलाया नहीं जा सकता। यह संस्था हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) की परीक्षाओं का प्रमुख केन्द्र है। विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना भी वर्ष 2001 में मॉरीशस में हो चुकी है।

<u>श्रीलंका</u> :- श्रीलंका की संस्कृति भी वही है जो भारत की है। श्रीलंका में भारतीय पत्रिकाएं व ई-पत्र जैसे चंदामामा, सरिता, बाल-भारती आदि बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं और भारतीय शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम रेडियो पर प्रसारित होते हैं। भारतीय धार्मिक कहानियों जैसी कथा के भंडार आज भी सुरक्षित हैं। श्रीलंका में भाषण, फिल्म प्रदर्शन, विचार गोष्ठी आदि का आयोजन होता रहता है और विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। वहां हिन्दी का प्रचार-प्रसार अत्यंत ही सुचारू और सुव्यवस्थित ढंग से होता रहता है। हर क्षेत्र में हिन्दी की प्रगति हो रही है।

फिजी :- फिजी की संस्कृति एक सामाजिक संस्कृति है जिसमें काईबीती (वहां के मूल निवासी), भारतीय, आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड के निवासी हैं। प्रथम लिओनीदास जहाज ने 5 मई, 1871 को 471 भारतीयों को लेकर फिजी में प्रवेश किया था। प्रवासी भारतीयों ने न केवल अपना खून-पसीना बहाकर फिजी देश को आबाद किया अपितु हिन्दी भाषा की ज्योति भी प्रज्जवलित की जो आज भी फिजी में अपनी रोशनी फैला रही है। फिजी में औपचारिक हिन्दी का प्रयोग स्कूलों के साथ-साथ पूजा, शादी आदि के अवसरों पर होता है। शिक्षा विभाग द्वारा हिन्दी एक विषय के

रूप में पढ़ाई जाती है। फिजी हिन्दी साहित्य समिति हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बहुमूल्य योगदान दे रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य ही हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देना है। हिन्दी को फिजी के संविधान में भी मान्यता प्राप्त है। यहां की भाषा काईबीती (फिजीयन), हिन्दी एवं अंग्रेजी है। हिन्दी प्रेमी लेखकों ने हिन्दी केन्द्र व समिति बनाई है जहां वे हिन्दी गोष्ठियां, प्रतियोगिताएं आयोजित करते हैं। हिन्दी के विभिन्न कार्यक्रम होते हैं। वहां की अदालत, सरकारी कामकाज एवं संसद में कोई भी व्यक्ति हिन्दी का प्रयोग कर सकता है। फिजी में हिन्दी प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रही है और फिजी में इसका भविष्य उज्जवल है।

भारत और विदेशों में अब तक 11 विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किये जा चुके हैं जो क्रमश: नागपुर (1975), मॉरीशस (1976), नई दिल्ली (1983), मॉरीशस (1993), त्रिनिदाद एवं टोबेगो (1996), लंदन (1999), सूरीनाम (2003), न्यूयार्क (2007), जोहान्सबर्ग (2012), भोपाल (2015) तथा मॉरीशस (2018) में हुए थे। इस प्रकार हिन्दी भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के विराट फलक पर अपना अस्तित्व स्थापित कर रही है और विश्व भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में येन विश्वविद्यालय में 1815 से हिन्दी की व्यवस्था है। बीबीसी से हिन्दी में कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। हिन्दी में पढ़ने लिखने की लंदन, कैंम्ब्रिज तथा यार्क विश्वविद्यालयों में व्यवस्था है और यहां से प्रवासिनी, अमरदीप जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन भी होता है। कैलाग ने 1875 में हिन्दी भाषा का व्याकरण तैयार किया था। अमेरिका से हिन्दी जगत पत्रिका प्रकाशित होती है। रूस में जितना अनुवाद हिन्दी पुस्तकों का हुआ है शायद ही किसी भाषा का हुआ हो। त्रिनिदाद व टोबेगो में 45 प्रतिशत से अधिक भारतीय मूल की आबादी है। गुयाना में 51 प्रतिशत से अधिक लोग भारतीय हैं। यहां बी.ए. स्तर पर अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है। फ्रांस, इटली, डेनमार्क, जर्मन, स्वीडन, नार्वे, रोमानिया, हंगरी, स्विटजरलैंड, बल्गारिया एवं आस्ट्रिया विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पठन-पाठन की व्यवस्था है। मालदीव की भाषा भी हिन्दी से मिलती जुलती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की प्रगति यदि इसी प्रकार होती रही तो वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ में एक अधिकारिक रूप हासिल कर लेगी।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रगति के पथ पर बढ़ रही हिन्दी आज अपने ही घर में बेगानी क्यों है। जिस भाषा में भारतेन्दु हरिशचंद्र ने "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" कह कर प्रतिष्ठित किया, हमें पराधीनता की गहरी निद्रा से झकझोर कर उठाया, जिस भाषा में तुलसीदास जी ने रामचरितमानस लिखकर मानवीय संबंधों का स्वर्णिम आदर्श प्रस्तुत कर मानवता का रक्षण किया, सूरदास जी ने कृष्ण भक्ति कर शांति दी। हिन्दी के ध्येय वाक्य भारत माता की

जय, झंडा ऊंचा रहे हमारा, स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है आदि उद्घोषों पर सबाल-वृद्ध हंसते-हंसते फांसी का फंदा चूमने को तैयार रहते थे, उस जन-जन की भाषा को अपने ही देश में दोयम दर्जा दिया जाना विकृत मानसिकता की निशानी नहीं तो और क्या है। अंग्रेजों से तो हमें मुक्ति मिल गई परन्तु अंग्रेजी आज तक हमें गुलाम बनाए हुए है। फिरंगियों का बोल-बाला आज भी हमारे दिलो-दिमाग पर छाया हुआ है। हम अंग्रेजी बोलने वाले को निपुण और हिन्दी भाषी व्यक्ति को कम तर आंकते हैं। आज इसी मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है और यह हम सभी के प्रयासों से ही संभव है।

जापान जैसा देश जो परमाणु प्रहार के बाद लगभग नस्ते-नाबूद हो गया था, आए दिन प्राकृतिक आपदा का सामना करता है फिर भी अपनी भाषा के बल पर अपनी तकनीकी को पूरे विश्व में फैला रहा है। कैसी अजीब विडम्बना है कि हम अपनी ही भाषा को प्रसार-प्रचार करने में शर्म महसूस करते हैं। यह बहुत ही लज्जाजनक है। हिन्दी के प्रति इस बेगानेपन को हमें अपनेपन में परिवर्तित करना ही होगा चाहे इसके लिए कड़े कदम उठाने हों। जिस तरह पुरानी परम्पराएं, इमारतें, धरोहर अनदेखी के कारण समाप्त हो रही हैं कहीं ऐसा ही हमारी राजभाषा हिन्दी के साथ न हो। साल में हिन्दी दिवस के अवसर पर ही उसे याद न किया जाए अपितु पूरे साल ही उसे प्यार से पाला पोसा जाए क्योंकि निज भाषा के प्रति स्वाभिमान और हिन्दी भाषा का समुचित ज्ञान एवं तकनीकी कुशलता ही हिन्दी में कार्य करने का आधार है। हमें गर्व से अपनी राजभाषा का प्रयोग करना चाहिए और राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को उच्चतम स्थान दिलाने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए जिसकी वह अधिकारिणी है। कवि कहता है कि :-

"है अंधेरी रात, पर दीपक जलाना कब मना है।"

****

हिन्दी बोलने में शर्म नहीं गर्व होना चाहिए

कोयल अपनी भाषा बोलती है, इसलिये आजाद रहती है।
किन्तु तोता दूसरों की भाषा बोलता है,
इसलिये पिंजरे में जीवन भर गुलाम रहता है।

अपनी भाषा,
अपने विचार और
"अपने आप" पर विश्वास करें।

****

35 किलोमीटर का सफर

केशवा नन्द द्विवेदी
वरिष्ठ आरेखण अधिकारी

ये जीवन एक ऐसा सफर है जिसमें सम्पूर्ण जीवन निहित है। 18 जून 1984 को जब मैं घर से मिज़ोरम के लिए चला था तो जेहन बिलकुल शून्य था। न कोई राह, ना कोई मंजिल, बस एक धुन थी कि शिक्षा ग्रहण के उपरांत क्या जीवन बदलेगा? क्या मेरे जीवन का कोई मकसद है? क्या होगा आगे? कुछ भी तो समझ में नहीं आ रहा था? किस डगर पर जा रहा हूँ? किन्तु एक दृढ़ संकल्प ले लिया था कि जो भी हो इस कदम का अंजाम, अच्छा हो या बुरा, चला ही जाता हूँ। एक सकारात्मक सोच लिए ऐसे सफर में भाग लेना जरूरी था।

18 अक्तूबर, 1984 को सफर शुरू हो गया। दिल में नयी उमंग, नयी तरंग, नया उत्साह, नया जोश सब कुछ नया-नया था। पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। दिल हवा में उडने लगा था। कितना लम्बा है ये सफर? इससे कुछ लेना देना नहीं। बस जीवन के उस छोर पर पहुँचना है, जहां एक सम्मान, एक शोहरत, एक आदर्श, एक चाहत और एक निश्चिंतता से भरी जिंदगी को जिया जाए। इस सफर की शुरुआत हो चुकी थी। कदम दर कदम बढ़ते गए। कहीं पर खुशियाँ तो कहीं पर गम मिलते जा रहे थे। कहीं आसमान तो कहीं जमीन नजर आ रही थी। कहीं अंधेरा तो कहीं उजाला ही उजाला। कभी कोई चढ़ाई चढ़नी पड़ी तो कभी आसान सा रास्ता। हर तरह के लोग रास्ते में मिलते गए। कोई गले लगा लेता तो किसी को मैं गले लगा लेता। कार्यस्थली के लोग भी सभी अपने लगने लगे। मन में हमेशा दूसरों के प्रति सम्मान रहता था। कहीं हरियाली नजर आती थी तो कहीं पर सूखा। कहीं पथरीली जमीन, तो कहीं पर मखमली दूब जैसा अहसास। कोई मुझसे आगे निकलता गया तो किसी को मैंने पीछे छोड़ दिया। कभी दौड़ लगाई तो कभी ठहराव के साथ चलता रहा। रास्ते में अडचने भी आती थी, कभी प्यास लगती तो कभी भूख। लेकिन अपनी मंजिल की ओर चलता गया। नए नए लोगों से मुलाक़ात हो जाती तो जो लोग पीछे छूट जाते, उनको खूब याद करता रहता था।

अभी सफर के चार किलोमीटर ही चला था कि सफर की दिशा ही बदल गयी। कुछ नए अंदाज में नयी सफर की ज़िम्मेदारी आ गयी। जोकि जीवन में साथ चलने के लिए जरूरी है। अगर जीवन में साथ दौडने के लिए साझीदार अच्छा मिल जाए तो उस का आनंद ही कुछ और है। एक दूसरे का हाथ थाम कर चलना जरूरी है। क्योंकि अगर कभी कोई ठोकर लग जाए या पैर में कांटा चुभ जाए तो उसको ठीक करने वाला भी होना चाहिए।

अब सब्र नही संघर्ष करना है,
भाग्य भरोसे न जीवन बितने देना है,
महज विडम्बनाएं है परिस्थिति की,
ये आने वाले उतार-चढ़ाव,
निरंतर बढ़ना है मंजिल को,
चाहे पैरों में पड़ जाए घाव,

कभी कोमल, तो कभी पथरीली होगी राहें,
कभी एहसास होगा खुशी का,
तो कभी निकलेंगी दर्द की आहें,
रुकना नही बीच पथ में तुझे,
निरंतर चलना है,
पाने मंजिल को तुझे,
अब सब्र नही संघर्ष करना है,
भाग्य भरोसे न जीवन बितने देना है ।

कभी सिखायेंगी गलतियां हमें,
तो कभी गिरायेंगी परिस्थितियां हमें,
कभी डूबा देगी दरिया में किसी,
तो कभी दिखाएंगी किनारा हमें,

संभाल लेना खुद को हर हालात में,
तुझे संभालने ना आएगा कोई,
महसूस करो जब अकेला खुद को,
आईना बताएगा, साथ है कोई,

इंतज़ार न साथ पाने का करना है,
अपनी लड़ाई अंतिम सांस तक लड़ना है,
अब सब्र नही संघर्ष करना है,
भाग्य भरोसे न जीवन बितने देना है ।

माना दुनिया ठीक नहीं है
तेरी मेरी नजरों में......
खुद को यार बदल कर देखो
इसको अगर बदलना है।

जो मुस्करा रहा है, उसे दर्द ने पाला होगा।
जो चल रहा है, उस के पाँव में जरूर छाला होगा।
बिना संघर्ष के चमक नहीं मिलती,
जो जल रहा है तिल तिल,
उसी दिये में उजाला होगा।

ऊपरी लिखित बातों को ध्यान में रखते हुये जीवन का यह सफर आगे बढ़ने लगा। संघर्ष ही जीवन है। जीवन संघर्ष का ही दूसरा नाम है। इस सृष्टि में छोटे-से-छोटे प्राणी से लेकर बड़े-से-बड़े प्राणी तक, सभी किसी-न-किसी रूप में संघर्षरत हैं। जिसने संघर्ष (Struggle) करना छोड़ दिया, वह मृतप्राय: हो गया। जीवन में संघर्ष है प्रकृति के साथ, स्वयं के साथ, परिस्थितियों के साथ। तरह-तरह के संघर्षों का सामना आए दिन हम सबको करना पड़ता है और इनसे जूझना होता है। जो इन संघर्षों का सामना करने से कतराते हैं, वे जीवन से भी हार जाते हैं, जीवन भी उनका साथ नहीं देता।

सफलता व कामयाबी (Success) की चाहत तो सभी करते हैं, लेकिन उस सफलता को पाने के लिए किए जाने वाले संघर्षों से कतराते हैं। मिलने वाली सफलता सबको आकर्षित भी करती है, लेकिन उस सफलता की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले संघर्ष (Struggle) को कोई नहीं देखता, न ही उसकी और आकर्षित होता है। जबकि सफलता तक पहुँचने की वास्तविक कड़ी वह संघर्ष ही है। हम जिन व्यक्तियों को सफलता की ऊँचाइयों पर देखते हैं, उनका भूतकाल अगर हम देखेंगे तो हमें जानने को मिलेगा की यह सफलता जीवन के साथ बहुत संघर्ष से प्राप्त हुई है। वास्तव में जब व्यक्ति अपने संघर्षों से दोस्ती कर लेता है, प्रसन्नता के साथ उन्हें अपनाता है, उत्साह के साथ चलता है तो संघर्ष का सफर उसका साथ देता है और उसे कठिन-से-कठिन डगर को पार करने में मदद करता है। लेकिन यदि व्यक्ति जबरन इसे अपनाता है, बेरुखी के साथ इस मार्ग पर आगे बढ़ता है, तो वह ज्यादा दूर तक नहीं चल पाता, बड़ी कठिनाई के साथ ही वह थोड़ा-बहुत आगे बढ़ पाता है। जब जीवन में एवरेस्ट जैसी मंजिल हो और उस तक पहुँचने के लिए कठिन संघर्षों का रास्ता हो, तो घबराने से बात नहीं बनती, संघर्षों को अपनाने से ही मंजिल मिल पाती है मंजिल उनको मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है। कुछ भी असंभव नहीं है। जितने भी प्रसिद्ध व्यक्ति हुए है, अनवरत संघर्ष से ही उन्होंने ख्याति प्राप्त की है।

चलते-चलते कब इस मंजिल तक पहुंचे, पता ही नहीं चला। समय की भी एक सीमा है। हम बंधनों से छुटकारा नहीं पा सकते। जीवन की वो अनुभूति व्यक्ति को सदैव कुछ ना कुछ सिखाती रहती है।

****

महिमा गुरू की

अभिषेक शंकर कोवे
वाप्कोस, भोपाल

यह सत्य है कि भगवान बनने की पात्रता हर पत्थर में नहीं होती, लेकिन जो पत्थर भी भगवान बनता है उसके लिए शिल्पकार जरूर चाहिए, जो कांट-छांट कर उसके दैवीय रूप को प्रकट कर सके। उसी शिल्पकार को गुरु कहा जाता है। जीव को भ्रम से ब्रह्म की यात्रा करा दे, शिष्य को शव से शिव बना दे, मृत में मूर्ति प्रतिष्ठापित करा दे यही तो गुरु का काम है। बाधा से राधा तक पहुँचाना, अपराध से आराधना की यात्रा, यही गुरु का कार्य है। गुरु कृपा से ही कौआ से हंस बना जा सकता है। दुनिया में कौन ऐसा है जिसने गुरु तत्व की शरण ना ली हो।

गुरू का अर्थ :-

महर्षि दयानन्द जी के अनुसार संस्कृत की "गृ" धातु जिसका अर्थ है अज्ञान "रू" प्रत्यय लगाने से संयुक्त शब्द होता है "गुरु" जिसका अर्थ होता है अज्ञान को हरने वाला। गुरु मनुष्य जीवन के विकास में सबसे महत्वपूर्ण है। किसी भी उपकार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना हिन्दु समाज की विशेषता है। इस सृष्टि में "माँ" ही प्रथम गुरु है। भारतीय संस्कृति में व्यक्ति ही नहीं तत्व को भी गुरु के रूप में स्वीकार करने की परम्परा विद्यमान है।

गुरु का आसन सबसे ऊंचा है, ईश्वर से भी। क्योंकि, इन्हीं के द्वारा दिये ज्ञान से हम ईश्वर तक का साक्षात्कार कर सकते हैं। बिना गुरु के गोविंद को हम जान ही नहीं पाते। हम आज अगर चांद तक को लांघ चुके हैं तो यह सब उसी ज्ञान की वजह से मुमकिन हो पाया है, जो गुरु ने हमें दिया है। गुरु के चरणों में ज्ञान का सागर है।

गुरू पूर्णिमा की मान्यता :-

भारत अनादिकाल से ही ऋषि-मुनियों की भूमि रही है और उनकी पूजा-अर्चना भी होती रहती है। पर हमारी भारतीय संस्कृति में जिस प्रकार से प्रत्येक काम का कोई न कोई महत्वपूर्ण दिन निर्धारित हुआ है, उसी प्रकार गुरु पूजन की परंपरा को भी एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, जिसे व्यास पूर्णिमा या आषाढ़ी पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। गुरु पूर्णिमा को महार्षि वेद व्यास जी के जन्मदिन के अवसर पर मनाया जाता है। ये वही मुनि श्रेष्ठ हैं, जिन्होंने चारों वेदों, अठ्ठारह पुराणों और श्रीमद् भागवत की रचना की। इस वर्ष आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन गुरु

पूर्णिमा तथा चंद्र ग्रहण भी रहा। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार 159 वर्षों के बाद ऐसा दुर्लभ संयोग बना। आषाढ़ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रूप में पूरे देश में उत्साह के साथ मनाया जाता है।

<u>आषाढ़ की पूर्णिमा ही क्यों है गुरु पूर्णिमा</u> :-

आषाढ़ की पूर्णिमा को चुनने के पीछे गहरा अर्थ है। अर्थ है कि गुरु तो पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह हैं जो पूर्ण प्रकाशमान हैं और शिष्य आषाढ़ के बादलों की तरह। आषाढ़ में चंद्रमा बादलों से घिरा रहता है जैसे बादल रूपी शिष्यों से गुरु घिरे हों। शिष्य सब तरह के हो सकते हैं, जन्मों के छाए अंधेरे बादल की तरह ही हैं। उसमें भी गुरु चांद की तरह चमक सके, उस अंधेरे से घिरे वातावरण में भी प्रकाश जगा सके, तो ही गुरु पद की श्रेष्ठता है। इसलिए आषाढ़ की पूर्णिमा का महत्व है। इसमें गुरु की तरफ भी इशारा है और शिष्य की तरफ भी। यह इशारा तो है ही कि दोनों का मिलन जहां हो, वहीं कोई सार्थकता है।

<u>अर्थ गुरू दक्षिणा का</u> :-

जीवन को सही दृष्टि गुरु के मार्गदर्शन से ही प्राप्त होती है। गुरुजनों के प्रति पूज्यभाव यह हमारी प्रकृति है। गुरु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन एवं समर्पण का प्रतीक "गुरु दक्षिणा" यह हमारी प्राचीन पद्धति है जैसे :- अरुणि, शिवाजी, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, कौत्स आदि। जहां गुरू दक्षिणा शब्द का वाचन होता है, वहीं एकलव्य की गाथा का अनुसरण व चित्रण मन में होने लगता है।

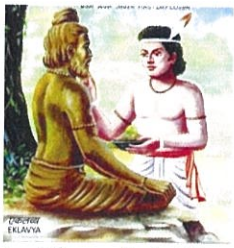

एकलव्य को धनुष-बाण बहुत प्रिय था। एक दिन वह धनुर्विद्या सीखने के उद्देश्य से गुरु द्रोणाचार्य के पास आकर बोला- 'गुरुदेव, मुझे धनुर्विद्या सिखाने की कृपा करें।' तब गुरु द्रोणाचार्य के समक्ष धर्मसंकट उत्पन्न हुआ क्योंकि उन्होंने भीष्म पितामह को वचन दे दिया था कि वे केवल राजकुमारों को ही शिक्षा देंगे और एकलव्य राजकुमार नहीं है अतः उसे धनुर्विद्या कैसे सिखाऊं। अतः द्रोणाचार्य ने एकलव्य से कहा - 'मैं तुझे धनुर्विद्या नहीं सिखा सकूंगा।' एकलव्य घर से निश्चय करके निकला था कि वह केवल गुरु द्रोणाचार्य को ही अपना गुरु बनाएगा। अतः एकलव्य ने अरण्य में एकांत में जाकर गुरु द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाई और मूर्ति की ओर एकटक देखकर ध्यान करके उसी से प्रेरणा लेकर वह धनुर्विद्या सीखने लगा। मन की एकाग्रता तथा गुरुभक्ति के कारण उसे उस मूर्ति से प्रेरणा मिलने लगी और वह धनुर्विद्या में बहुत आगे बढ़ गया।

एक बार गुरु द्रोणाचार्य, पांडवों एवं कौरवों को लेकर धनुर्विद्या का प्रयोग करने अरण्य में आए। उनके साथ एक कुत्ता भी था, जो थोड़ा आगे निकल गया। कुत्ता वहीं पहुंचा जहां एकलव्य अपनी धनुर्विद्या का प्रयोग कर रहा था। एकलव्य के खुले बाल एवं फटे कपड़े देखकर कुत्ता भौंकने लगा। एकलव्य ने कुत्ते को बाण लगे नहीं, चोट न पहुंचे और उसका भौंकना बंद हो जाए इस ढंग से सात बाण उसके मुंह में थमा दिए। कुत्ता वापिस वहां गया, जहां गुरु द्रोणाचार्य के साथ पांडव और कौरव थे। तब अर्जुन ने कुत्ते को देखकर कहा- गुरुदेव, यह विद्या तो मैं भी नहीं जानता। यह कैसे संभव हुआ? आपने तो कहा था कि मेरी बराबरी का दूसरा कोई धनुर्धारी नहीं होगा, किंतु ऐसी विद्या तो मुझे भी नहीं आती।' द्रोणाचार्य ने आगे जाकर देखा तो वहां हिरण्यधनु का पुत्र गुरुभक्त एकलव्य था। द्रोणाचार्य ने पूछा- 'बेटा! यह विद्या कहां से सीखी तुमने?' एकलव्य- 'गुरुदेव! आपकी ही कृपा से सीख रहा हूं।' द्रोणाचार्य तो वचन दे चुके थे कि अर्जुन की बराबरी का धनुर्धर दूसरा कोई न होगा। किंतु यह तो आगे निकल गया। अब गुरु द्रोणाचार्य के लिए धर्मसंकट खड़ा हो गया। एकलव्य की अटूट श्रद्धा देखकर द्रोणाचार्य ने कहा- 'मेरी मूर्ति को सामने रखकर तुमने धनुर्विद्या तो सीख ली, किंतु मेरी गुरु दक्षिणा कौन देगा?' एकलव्य ने कहा- 'गुरुदेव, जो आप मांगें?' द्रोणाचार्य ने कहा- तुम्हें मुझे दाएं हाथ का अंगूठा गुरु दक्षिणा में देना होगा।' एकलव्य ने एक पल भी विचार किए बिना अपने दाएं हाथ का अंगूठा काटकर गुरुदेव के चरणों में अर्पण कर दिया।

धन्य है एकलव्य जो गुरुमूर्ति से प्रेरणा पाकर धनुर्विद्या में सफल हुआ और गुरु दक्षिणा देकर दुनिया को अपने साहस, त्याग और समर्पण का परिचय दिया। आज भी ऐसे साहसी धनुर्धर एकलव्य को उसकी गुरु निष्ठा और गुरु भक्ति के लिए याद किया जाता है।

"पतत्वेष कायो" एक संकेत मात्र है। इसका वास्तविक अर्थ केवल काया (शरीर) तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है मेरा शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा तथा वह सब कुछ जो मेरे पास किसी भी रूप में है उस सबका समर्पण। पूजा का अर्थ है समर्पण की भावना को प्रकट करना। अभावों में भी श्रद्धाभाव के साथ, कष्ट उठाते हुए भी, निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर जो भी दिया जाता है, वही सच्चा समर्पण है। इसी को श्रीगुरु दक्षिणा कहते हैं।

राजा दशरथ के दरबार में गुरु वशिष्ठ से भला कौन परिचित नहीं है, जिनकी सलाह के बगैर दरबार का कोई भी कार्य नहीं होता था। गुरु की भूमिका भारत में केवल आध्यात्म या धार्मिकता तक ही सीमित नहीं रही है, देश पर राजनीतिक विपदा आने पर गुरु ने देश को उचित सलाह देकर विपदा से उबारा भी है। अर्थात् अनादिकाल से गुरु ने शिष्य का हर क्षेत्र में व्यापक एवं समग्रता से मार्गदर्शन किया है। अतः सद्गुरु की ऐसी महिमा के कारण उसका व्यक्तित्व माता-पिता से भी ऊपर है। गुरु तथा देवता में समानता के लिए एक श्लोक के अनुसार -

'यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरु'

अर्थात् जैसी भक्ति की आवश्यकता देवता के लिए है वैसी ही गुरु के लिए भी। बल्कि सद्गुरु की कृपा से ईश्वर का साक्षात्कार भी संभव है। गुरु की कृपा के अभाव में कुछ भी संभव नहीं है।

गरूर ब्रह्मा गरूर विष्णु गरूर देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अपनी महत्ता के कारण गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा पद दिया गया है। शास्त्र वाक्य में ही गुरु को ही ईश्वर के विभिन्न रूपों- ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर के रूप में स्वीकार किया गया है। गुरु को ब्रह्मा कहा गया क्योंकि वह शिष्य को बनाता है नव जन्म देता है। गुरु, विष्णु भी है क्योंकि वह शिष्य की रक्षा करता है। गुरु, साक्षात महेश्वर भी है क्योंकि वह शिष्य के सभी दोषों का संहार भी करता है।

<u>संत कबीर कहते हैं</u> :-

"हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर।।"

अर्थात् भगवान के रूठने पर तो गुरु की शरण रक्षा कर सकती है किंतु गुरु के रूठने पर कहीं भी शरण मिलना संभव नहीं है। जिसे ब्राह्मणों ने आचार्य, बौद्धों ने कल्याणमित्र, जैनों ने तीर्थंकर और मुनि, नाथों तथा वैष्णव संतों और बौद्ध सिद्धों ने उपास्य सद्गुरु कहा है उस श्री गुरु से उपनिषद् की तीनों अग्नियां भी थर-थर कांपती हैं। त्रैलोक्यपति भी गुरु का गुणगान करते हैं। ऐसे गुरु के रूठने पर कहीं भी ठौर नहीं।

<u>गुरु पूर्णिमा पर्व का महत्व</u> :-

जीवन में गुरु और शिक्षक के महत्व को आने वाली पीढ़ी को बताने के लिए यह पर्व आदर्श है। व्यास पूर्णिमा या गुरु पूर्णिमा अंधविश्वास के आधार पर नहीं बल्कि श्रद्धाभाव से मनाना चाहिए। गुरु का आशीर्वाद सबके लिए कल्याणकारी व ज्ञानवर्द्धक होता है, इसलिए इस दिन गुरु पूजन के उपरांत गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए। सिख धर्म में इस पर्व का महत्व अधिक इस कारण है क्योंकि सिख इतिहास में उनके दस गुरुओं का बेहद महत्व रहा है।

"गुरू हमारे सबसे प्यारे सबसे प्यारे, सभी गुरूओं से वह न्यारे।
हम सबकों वह ज्ञान दिलाते, जीवन की पहचान दिलाते।
देखों हमारा यह जग सारा, इन्होंने बनाया यह प्यारा-प्यारा।
हम सब इनके ही गुण गाएं, इन्हें प्रेम से शीश झुकाएं।।"
संसार के समस्त गुरुओं को मेरा नमन।

****

स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत

निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.)

आओ मिलकर स्वच्छ भारत और स्वस्थ भारत की शुरूआत करें
बिना किसी को देखे हम अपना श्रमदान करें
श्रेष्ठ व्यक्ति के आचरण को हर कोई अपनाता है,
वह जो प्रमाणित कर देता लक्ष्य वही बन जाता है,
गीता का यह सरल मंत्र है लोग सभी दोहराते हैं,
निज जीवन में इसी राह पर करके इसे दिखाते हैं,
हम भी इसी राह पर चलकर स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत के लिए कदम बढ़ाते हैं,
अधिकारों की खूब भीड़ हो गई, कुछ कर्तव्य निभाते हैं,
नदियों में न फैंके कूड़ा, थूकें न हम इधर-उधर,
खुले में न शौच करें हम, हाथ धोये मल-मलकर,
जो वस्तुएं नहीं उपयोगी उसका तुरंत निदान करें,
बीमारी फिर पास न आए स्वयं ही उपचार करें,
हो कल्याण सभी का बस थोड़ा सा प्रयास करें,
कचरा न फैंके इधर-उधर न किसी को फैलाने दें,
बस सचेत होकर गांधीगिरी से समझा दें
देश की धरोहर पर जब सबका अधिकार है
बस करना है जीवन में बदलाव
देश को मान अपना घर, निर्मल स्वच्छ बनाना है,
पड़ोसी का इंतजार न कर खुद आगे बढ़ जाना है,
देश है सबका, देश है अपना, बस हमें स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत बनाना है
बस हमें स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत बनाना है।

*****

महिला सशक्तिकरण

राजेश कुमार, अभियंता
भोपाल कार्यालय

भारत दुनिया का एक मात्र देश हैं जहां महिलाओं को सर्व प्रथम स्थान प्रदान किया जाता है। भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति अर्थात देवी माना गया हैं, जो हमेशा सच और साहस का सामना करती है, इसलिए हमें भी इस बात पर विचार करना चाहिए कि प्रत्येक महिला जागरूक और शिक्षित हो जिससे वह अपने ज्ञान एवं कौशल से प्रत्येक वर्ग के विकास की साझेदार बन सके। सर्वप्रथम हमें महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है जिससे महिलाओं में ज्ञान, आत्मविश्वास और कौशल विकास का समावेशन होगा। भारत सरकार और राज्य सरकारों द्वारा चलाये जा रहें, जागरूक अभियान एवं विभिन्न योजनाओं का लाभ प्रत्येक महिला तक पहुँचाने की आवश्यकता है, साथ ही समाज को भी अपना उत्तर दायित्व निभाने कि आवश्यकता है, जिससें वह आत्मविश्वास के साथ एक बेहतर भविष्य के निर्माण में सहयोगी बन सकें। शिक्षित महिला परिवार और समाज के लिए एक आधारशिला रखती है। इसी प्रकार अगर शिक्षित महिला प्रत्येक परिवारों में होगी तो वह अपने बच्चों, परिवार और समाज के प्रति महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वाहन करेगी। शिक्षित महिला समाज का उत्थान करती है, जिससे वर्तमान में होने वाले घरेलू हिंसा जैसे अपराधों, शिशु मृत्यु दर एवं विभिन्न बिमारियां स्वतः ही खत्म हो जाएंगी। महिला सशक्तीकरण राष्ट्रीय नीति 2016 के अनुसार महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण, कौशल विकास एवं रोजगार प्रदान करके समान स्थिति में लाना है। भारतीय संविधान में महिला सशक्तीकरण के लिए समानता का अधिकार वर्णित किया गया है, जिसमें प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों एवं राज्य नीति निर्देशक तत्वों में वर्णन किया गया है जो इस प्रकार है -

- अनुच्छेद -14 के अनुसार विधि के समक्ष समता का आधिकार।
- अनुच्छेद -15 के अनुसार धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध।
- अनुच्छेद -16 के अनुसार लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता।
- अनुच्छेद -39 (I) के अनुसार राज्य, समान न्याय और निःशुल्क विधि सहायता प्रदान करेगा।
- अनुच्छेद -39 (II) के अनुसार राज्य, सार्वजनिक धन का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार बांटेगा जिससे सार्वजनिक हित का सर्वोत्तम साधन हो सके।
- अनुच्छेद -39 (III) के अनुसार राज्य, स्त्री और पुरूष सभी को आजीविका के समान साधन उपलब्ध कराएगा तथा समान कार्य के लिए समान वेतन देगा।

- अनुच्छेद -42 के अनुसार राज्य, कार्य की न्यायसंगत और मानवोचित्त दिशाओं तथा प्रसूति को सहायता प्रदान करेगा।

महिलाओं को जागरूक बनाने के लिए सरकार और समाज को मिलकर सहयोग करने की आवश्यकता है जिससे वह सामाजिक स्तर, राजनैतिक स्तर एवं आर्थिक स्तर पर मजबूत होगी। भारत सरकार द्वारा क्रियान्वयन की जाने वाली इन योजनाओं का लाभ प्रत्येक महिलाओं तक पहुंचाना आवश्यक है।

- बेटी बचाओ-बेटी बढाओः- इसके अन्तर्गत बालिकाओं को सुरक्षा एवं शिक्षा प्रदान की जाती है।
- स्पोर्ट टू ट्रेनिंग एण्ड एम्पलॉयमेन्ट फॉर वूमन (STEP) इसके अंतर्गत महिलाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण एवं रोजगार प्रदान किया जाता है।
- राष्ट्रीय महिला कोष
- इन्दिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना
- उज्जवला योजना
- SWADHAR योजना

महिला सशक्तीकरण के लाभ :-

- शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ जायेगा
- मातृ शिशु मृत्यु दर में कमी होगी
- साक्षरता में वृद्धि
- स्वास्थ सेवाओं में वृद्धि
- बाल मजदूरी में कमी
- लिंग अनुपात में वृद्धि
- महिलाओं की कार्यस्थल एवं राजनीति में जन भागीदारी बढ़ जायेगी।
- औद्योगिक क्रांति में वृद्धि

हमें आदरणीय ज्योति राव फूले से प्रेरणा लेनी चाहिये, जिन्होनें अपनी पत्नी सावित्री बाई फुले को भारतीय इतिहास की सर्वपथम शिक्षिका बनाया था। साथ ही हमें केरल राज्य का मॉडल देश के सभी राज्यों में लागू करने से महिला सशक्तीकरण को मजबूती मिलेगी। भारत की प्रगति में महिलाओं ने भूमिका निभायी है, जिसका उदाहरण श्रीमती निर्मला सीता रमण, माननीय वित्त मंत्री, श्रीमती चित्रा रामकृष्णा, (सी. ई. ओ. एन. एस. ई. आई.), श्रीमती अंशुला कांत (एम. डी. एण्ड. सी. ई. ओ. वर्ल्ड बैंक ग्रुप) है।

****

लम्हें

के.एन.द्विवेदी
वरिष्ठ आरेखण अधिकारी

ज़िन्दगी से लम्हें चुरा, बटुए में रखता रहा,
फुरसत से खरचूंगा, बस यही सोचता रहा।

उधड़ती रही जेब, करता रहा तुरपाई,
फिसलती रही खुशियाँ, करता रहा भरपाई।

इक दिन फुरसत पायी, सोचा खुद को आज रिझाऊं,
बरसों से जो जोड़े, वो लम्हे खर्च आऊं।

खोला बटुआ लम्हे न थे, जाने कहाँ रीत गए,
मैंने तो खर्चे नहीं, जाने कैसे बीत गए !!

फुरसत मिली थी सोचा, खुद से ही मिल आऊं,
आईने में देखा जो, पहचान ही न पाऊँ।

ध्यान से देखा बालों पे, चांदी सा चढ़ा था,
था तो मुझ जैसा पर, जाने कौन खड़ा था।

******

जिन्दगी और समय, विश्व के दो सबसे बड़े अध्यापक हैं। जिन्दगी हमें समय का सही उपयोग करना सिखाती है जबकि समय हमें जिन्दगी की सही उपयोगिता बताता है।

जंक फूड की जगह घर का ताजा खाना खाएं

डी.के.सेठी
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

आजकल बाजारों में आने वाले जंक फूड स्वास्थ्य के लिए बहुत ज्यादा हानिकारक हैं। ये खाद्य पदार्थ मुख्य रूप से शुगर, ब्लड प्रेशर, मोटापा, हृदय आदि संबंधी रोगों के लिए काफी हद तक दोषी हैं। उच्च तकनीक के नाम पर शुद्धता और लम्बे समय तक टिकाये रखने के लिए इनमें जो रसायन मिलाये जाते हैं, वे सभी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होते हैं। जंक फूड जैसे मैदे से बनी वस्तुएं – चाउमीन, मैगी, समोसा, बिस्कुट, मट्ठी, बेकरी आइटम, बर्गर, पिज्जा आदि सभी वस्तुएं आयुर्वेद में निषेध हैं, इनसे कफ बढ़ता है और अस्थमा जैसी बीमारियां भी होती हैं। बच्चों को मैदे से बनी वस्तुएं कदापि नहीं देनी चाहिएं क्योंकि इनसे कफ बिगड़ता है और बच्चे चिड़चिड़े और हठी हो जाते हैं और आपकी कोई बात नहीं मानेगें। इनके स्थान पर घर का बना शुद्ध एवं साफ-सुथरा ताज़ा भोजन दें। शीतल पेय में छाछ, लस्सी, नीम्बू पानी, शरबत और औषधीय पेय पियें। कैम्पा कोला, कोक ड्रिंक, एनर्जी ड्रिंक, डिब्बा बंद जूस आदि से बचें। भोजन बनने के बाद जितनी जल्दी हो सके कर लेना चाहिए क्योंकि भोजन को अधिक देर तक रखने से उसकी पौष्टिकता कम होती रहती है। इसलिए बासी खाना खाने से जहां तक हो सके बचना चाहिएं।

स्वस्थ मनुष्य की तुलना में रोगी मनुष्य का भोजन अधिक क्षारीय होना चाहिए। यह भोजन हमारे शरीर में रक्त की अम्लता को सन्तुलित बनाये रखता है जिससे कम से कम बिमारियां होती हैं। जब हम अधिक तले-भुने पदार्थ या फास्ट फूड आदि खाते हैं तो हमारे शरीर में रक्त की अम्लता बढ़ जाती है जिसके कारण हमारा शरीर इसे कम करने के लिए शरीर के अन्य हिस्सों से कैल्शियम और अन्य खनिज तत्व खींचता है जिससे कई अन्य बिमारियां हमें आ घेरती है। रक्त की अम्लता को ठीक करने का सबसे अच्छा तरीका है कि हम जिस क्षेत्र में रहते हैं उसी क्षेत्र में होने वाले फल, सब्जी, अनाजों आदि का सेवन करें क्योंकि यही हमारी सेहत के लिए फायदेमंद है।

शादियों, समारोहों आदि में परोसा जाने वाला भोजन भी सेहत के लिए अच्छा नहीं होता क्योंकि वहां सब कुछ परस्पर विरूद्ध आहार होता है जैसे आइसक्रीम और अनेकों तरह के कोल्ड ड्रिंक्स है तो गरमा-गरम सूप, काफी आदि भी है, तली हुई तथा मसालेदार चीजों की भी भरमार है। पिज्जा, बर्गर जैसे बासी व्यंजन तथा दही-बड़ा इत्यादि भी है। अगर यह सब मिलाकर खाया जाए तो सबसे अधिक गंदा भोजन होता है और इस भोजन को पचने में भी सामान्य भोजन से कहीं अधिक समय लगता है। शून्य डिग्री की आइसक्रीम से लेकर 60-70 डिग्री के सूप जैसा खाना जब हम एक साथ खाते हैं तो यह अपच और पेट के गंभीर रोगों को जन्म देता है। इसलिए जहां तक हो सके हमें घर का बना भोजन ही करना चाहिए।

*****

जल संरक्षण

मकवाना धर्मेश एच.
एस.एस.पी.फील्ड कार्यालय, अहमदाबाद

जल जीवन का एक अनमोल रत्न है। जल के बीना जीवन असंभव है। जल है तो जीवन है। जल के बिना जीना मुश्किल है। विश्व में **70** प्रतिशत जल है उसमें **3** प्रतिशत जल उपयोग लायक है और उसमें कुछ प्रतिशत जल ही पीने लायक है। पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जहां पर जल है। अन्य दूसरे ग्रह जैसे मंगल, बुध, शुक्र, बंजर रेगिस्तान हैं। जहां जल नहीं है हमें जल का मूल्य समझना चाहिये। लोगों को जल संरक्षण के लिये प्रेरित करना चाहिये। पूरे विश्व में जल की बड़ी समस्या हो रही है जिसके लिए एक जुट होना पड़ेगा।

जल की समस्या बढ़ती आबादी, शहरीकरण औद्योगिकीकरण से हो रही है। जल की समस्या से लोग परेशान हो रहे हैं। लोगों को जल लेने के लिए दूर-दूर तक **4-5** किलोमीटर पैदल चल कर जाना पड़ता है। इसलिए हमें जल को बचाना और संरक्षण करना अति आवश्यक है। जल के लिए शहरों व गांवों में झगड़े भी होते हैं।

जल का हम खाना पकाने, कपड़े धोने, चिकित्सा, उद्योग आदि में उपयोग करते हैं। जल का कम से कम कैसे उपयोग हो ये सोचना चाहिये। बूंद-बूंद से तालाब, नदी और समुद्र बनता है इसे बचाकर रखना पड़ेगा। समुद्र में रहने वाले समुद्री जीव-जन्तु जल के बिना मर जाएंगे।

जल संरक्षण करके हमें गांव-गांव शहरीकरण को बढ़ावा देना चाहिये। वर्षा का पानी एकत्र करके इसे कपडे धोने, उद्योगों में, पौधों में उपयोग कर सकते है बारिश का पानी बह न जाय इसलिये छोटे-छोटे तालाब बनाने चाहिये ।

जल है तो सब संभव है वरना इस विश्व को नष्ट होने से कोई नहीं बचा सकेगा।
जल संरक्षण के लिये नहाने में फुव्वारे के बदले बाल्टी और मग का उपयोग करना चाहिये।
कपडे वाशिंग मशीन में धोएं ताकि कम पानी खर्च हो। पौधों को वर्षा के समय ही रोपण करना चाहिये ताकि वर्षा के कारण पौधों को प्राकृतिक जल मिल सके।

जल स्वच्छ भी होना चाहिये। हमारे देश में जलस्तरीय रोग के कारण मृत्युदर **1** सैकेण्ड में एक बच्चा है।

अब तो जल भी बिकने लगा है क्योंकि सभी को स्वच्छ जल चाहिये। पानी की बोटल **20-25** रूपये में मिल रही है। वह दिन दूर नहीं है कि हर इन्सान एक एक बूंद के लिए तरसेंगे। हमारी आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित रखने के लिए जल बचाना अति आवश्यक है।

हमारी सरकार को जल संरक्षण को बढावा देना चाहिये। औद्योगिकीकरण से निकले पानी को साफ करके दूसरी जगह इक्कठा करना चाहिये ताकि दूसरे नदी, नाले, तालाब प्रदूषित न हों।

मोटर साईकिल, कार आदि धोने के लिए पाईप के बदले बाल्टी ओर मग का उपयोग करे। जल बचायेंगे तो जीवन बचेगा। वर्षा जल इक्कठा करके हम उसका उपयोग कर सकते हैं। वर्षा का आना और वाष्पीकरण होना एक कुदरती प्रक्रिया है। जल संरक्षण के लिए हमें गॉवों में छोटे - छोटे तालाब चैकडेम बनाने चाहिये। जहां जरूरत हो वहीं पानी का उपयोग करें। होली के त्यौहार में पानी ज्यादा उपयोग होता है। पूरे विश्व में पानी की बहुत समस्या है। हम जल को बचायेंगे तो जल हमें बचाएगा। जल से ही हमारे जीवन की शुरूआत होती है। जल है तो कल है। अगर हम जल नहीं बचाएंगे तो पूरी दुनिया नष्ट हो जायेगी ।

एक दिन के समाचार पत्रों को बनाने के लिए **200-300** लीटर पानी की जरूरत होती है तो सोचिये पूरे विश्व में कितना पानी उपयोग होगा।

भोजन के बिना हम कुछ दिन रह सकते हैं लेकिन जल के बिना **2-3** दिन ही रह सकते हैं। हमारे वैज्ञानिकों ने दूसरे ग्रहों पर खोज की है लेकिन उसमें पानी नहीं है केवल पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जहां पानी है।

जल का कम से कम उपयोग करना चाहिये। जल की वजह से पूरी दुनिया टिकी है। पशु-पक्षी आदमी कीड़े-मकौड़े सब को जल की जरूरत है। इसलिए जल को बचाये उसका संरक्षण करें। जल से ही बिजली उत्पन्न होती है। जल के बिना जीना नामुमकिन है। नल को ठीक से बन्द करें, पाईप के बदले बाल्टी व मग का उपयोग करें। वर्षा का पानी इक्कठा करके कपडे, बरतन, सफाई आदि में उपयोग करें। हमारी नई पीढ़ी को जल संरक्षण को बढ़वा देना चाहिये।

****

जल है तो कल है, कल है तो हम हैं।
जल का संरक्षण करें ।

चूहे, तुमको नमस्कार है

संकलन : बेस्ट ऑफ जैमिनी हरियाणवी

चुके नहीं इतना उधार है, मंहगाई की अलग मार है,
तुम पर बैठे हैं गणेशजी, हम पर जो कर्जा सवार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है।।

भक्तजनों की भीड़ लगी है, खाने की क्या तुम्हें कमी है,
कोई देवे लड्डू, पेड़े, भेंट करे कोई अनार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है।।

परेशान जो मुझको करती, पत्नी केवल तुमसे डरती,
तुम्हे देखकर हे चूहेजी, चढ़जाता उसको बुखार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है।।

आफिस वर्क एकदम निल है, फिर भी ओवरटाइम बिल है,
बिल में घुसकर पोल खोल दो, सोमवार भी रविवार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है।।

कुरसी है नेता का वाहन, जिस पर बैठ करे वह शासन,
वहां भीड़ है तुमसे ज्यादा, यह कुरसी का चमत्कार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है।।

राजनीति ने जाल बिछाए, मानव उसमें फंसता जाए,
मानवता तो नष्ट हो रही, पशुता में आया निखार है।
चूहे, तुमको नमस्कार है।।

*****

आरंभ

तन्मय श्रीवास्तव
वरि. अभियंता (पावर)

थोड़े पर ही जो रुक गए, चले नहीं और थक गए,
थाम तू उनका हाथ, ले चल अपने साथ

मंजिल जो दूर दिखती है, तूफ़ान उठे, बिजली कड़कती है,
वर्षा घन-घोर जो हो चहुँओर, अँधेरी रात के बाद, पर होती है भोर

नया सवेरा आएगा, आसमान फिर मुस्कुराएगा,
सूर्य की पावन किरणों से, जग फिर सौंदर्य पायेगा

पौधे फिर दमक उठेंगे, जिन पर फूल चमक उठेंगे,
आएगी वो भोर, आनंद होगा चहुँओर

तू फिर उठेगा, तू फिर मुस्कुराएगा,
अपने पर विश्वास रख, तू फिर आगे बढ़ जायेगा

दुनिया तेरे कदम चूमेगी, तू वो होगा जिसमें होगा दम,
लगा सारी शक्ति को तू, मत आँक खुद को तू कम

आगे ही आगे बढ़ता जा, नहीं रख कोई अवधारणा इस मन में,
नहीं अभी ख़त्म हुआ ये युद्ध, नहीं अभी सबकुछ इस जीवन में

*****

आपके पत्र

राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान
(नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्त संस्थान)
National Institute of Solar Energy
(An Autonomous Institution of Ministry of New and Renewable Energy)
ग्वाल पहाड़ी, गुरुग्राम – फरीदाबाद मार्ग, गुरुग्राम – 122 003, हरियाणा, भारत
Gurugram–Faridabad Road, Gurugram – 122 003, Haryana, India
दूरभाष/ Tel. No. : 0124-285 3060, 285 3083
ईमेल/ Email : dgnise.mnre@gmail.com, nise.mnre@gmail.com
वेबसाइट/ Website : www.nise.res.in

02/28/03/2018-19/हिन्दी

दिनांक : 03 दिसम्बर, 2019

सेवा में,

सुश्री निम्मी भट्ट जी
प्रमुख (रा.भा.का.) एवं सम्पादक
'वाप्कोस दर्पण', वाप्कोस लिमिटेड
76-सी, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर 18
गुरुग्राम 122015 (हरियाणा)

विषय : गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" का अंक 93 (अप्रैल-जून, 2019)।

महोदया,

उपरोक्त संदर्भ में आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्रांक 7/365/2019-हिन्दी (दिनांक 22/10/2019) के साथ आपके प्रतिष्ठान की गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" प्राप्त हुई, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

राजभाषा, हिन्दी को समर्पित यह पत्रिका बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्री से ओत-प्रोत है तथा हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि की दिशा में आप द्वारा उठाया गया यह कदम सराहनीय और अनुकरणीय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक बधाई तथा आगामी अंक के लिए अग्रिम शुभकामनाएं।

शुभेच्छु,

(डॉ. अरुण कुमार त्रिपाठी)
महानिदेशक

वाप्कोस एक कहानी

एक कहानी है, एक सपना है,
एक कोशिश है हमारी, एक तमन्ना है।
सारी दुनिया पर, सूरज बन चमकेगा,
मील का पत्थर वाप्कोस बनकर दिखलाएगा।

जल ही जीवन है, ये हमने पहचाना है,
जल ही जीवन है, ये हमने पहचाना है,
समस्त नदियों का, हमने वंदन किया,
सरदार सरोवर हम, हम हैं पुनात्सांग्चू
एशिया में हम, अफ्रीका में हम, दुनियां से आगे हम।

देश जो मेरा है, हमारी धड़कन है,
देश जो मेरा है, हमारी धड़कन है,
स्वच्छ हो, स्वस्थ हो, प्रगति हो हर तरफ
लिफ्ट इरीगेशन से हर गांव सींचा है,
सलमा की ऊंचाई है, अपना पसीना है।

निर्माण हर पल नए, हम दिल से सृजन करें,
निर्माण हर पल नए, हम दिल से सृजन करें,
नवीन ऊर्जा से, हर घर रौशन करें,
जोश में हैं हम, करके दिखलाएंगे,
भारत माता की शान में बढ़ते ही जाएंगे।

एक कहानी है, एक सपना है,
एक कोशिश है हमारी, एक तमन्ना है।
सारी दुनिया पर, सूरज बन चमकेगा,
मील का पत्थर वाप्कोस बनकर दिखलाएगा।

सारी दुनिया पर, सूरज बन चमकेगा,
मील का पत्थर वाप्कोस बनकर दिखलाएगा।
बनकर दिखलाएगा ....
बनकर दिखलाएगा ....

धर्मवीर भारती

(25 दिसम्बर, 1926 - 4 सितम्बर, 1997)

धर्मवीर भारती आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक थे। उन्होंने अध्यापन और पत्रकारिता क्षेत्र में कार्य किया। उनकी कुछ प्रमुख कृतियां हैं : काव्य रचनाएं - ठंडा लोहा, कनुप्रिया, सपना अभी भी, आद्यन्त। कहानी संग्रह - मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग, बंद गली का आखिरी मकान, साँस की कलम से। उपन्यास - गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा, ग्यारह सपनों का देश, प्रारंभ व समापन।

थके हुए कलाकार से

सृजन की थकन भूल जा देवता !
अभी तो पड़ी है धरा अधबनी,

अभी तो पलक में नहीं खिल सकी
नवल कल्पना की मधुर चाँदनी
अभी अधखिली ज्योत्सना की कली
नहीं ज़िन्दगी की सुरभि में सनी

अभी तो पड़ी है धरा अधबनी,
अधूरी धरा पर नहीं है कहीं

अभी स्वर्ग की नींव का भी पता !
सृजन की थकन भूल जा देवता !
रुका तू, गया रुक जगत का सृजन
तिमिरमय नयन में डगर भूल कर

कहीं खो गई रोशनी की किरन
घने बादलों में कहीं सो गया
नयी सृष्टि का सप्तरंगी सपन
रुका तू, गया रुक जगत का सृजन

अधूरे सृजन से निराशा भला
किसलिए जब अधूरी स्वयं पूर्णता
सृजन की थकन भूल जा देवता !

प्रलय से निराशा तुझे हो गई
सिसकती हुई साँस की जालियों में
सबल प्राण की अर्चना खो गई

थके बाहुओं में अधूरी प्रलय
और अधूरी सृजन योजना खो गई

प्रलय से निराशा तुझे हो गई
इसी ध्वंस में मूर्च्छिता हो कहीं
पड़ी हो, नयी ज़िन्दगी; क्या पता ?
सृजन की थकन भूल जा देवता

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti
ISO 9001: 2015

पंजीकृत कार्यालय: कैलाश, 5वां तल, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 011-23313131-3, फैक्स: 011-23313134
निगमित कार्यालय: 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-18, गुरुग्राम-122015, (हरियाणा)
दूरभाष: 0124-2340548, फैक्स: 0124-2397392
ई-मेल: hindi@wapcos.co.in, वेबसाईट: www.wapcos.co.in